॥ श्रीः ॥

सङ्गीत-सुधाकर।

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेडके शास्त्र-प्रकाशन
विभाग द्वारा प्रकाशित।

प्रथम संस्करण | काशी, अक्षय्य तृतीया १९८४ | मूल्य ।=)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भरपूर अर्थलाभ

का

प्रयोजन हो, तो

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेडके

शेअर खरीदिये ।

नियम मंगानेका पता—

सिण्डिकेट भवन

स्टेशनरोड, बनारस सिटी ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्री ॥

सङ्गीत-सुधाकर ।

भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेडके शास्त्र-प्रकाशन
विभाग द्वारा प्रकाशित ।

काशी

अक्षय्य तृतीया १९८४ ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भारतधर्मप्रेसमें

संस्कृत, हिन्दी, बंगला और अंग्रेजीकी छपाई सुन्दर, शुद्ध, सस्ती और यथा समय होती है। छपाईके नमूने मंगाइये और एकबार अनुभव कीजिये।

मैनेजर—भारतधर्म प्रेस,

बनारस सिटी।

श्रीगोपालचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा—
भारतधर्म प्रेस, काशीमें मुद्रित।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भूमिका ।

—:※:—

प्रणवसे उत्पन्न हुई संगीत विद्या अनादि है और उसका प्रभाव भी अपरिमेय है। भगवान् शंकर, जगदम्बा सरस्वती, साक्षात् विष्णुस्वरूप हयग्रीव, देवर्षि नारद, भक्तवर हनूमान, तुम्बरू आदि इसके आदि अचार्य हैं। महाभारतके समयमें अन्तःपुरोंतकमें सङ्गीतकी सविधि शिक्षा दी जाती थी। श्रीकृष्णकी मधुर मुरलीकी तानसे गोपियां ही क्या, देवगण तक मुग्ध हो जाते थे। आजतक जितने भक्तगण हुए, प्रायः सभी सङ्गीत प्रेमी थे। सूर, तुलसी, नानक, कबीर, चैतन्य, रामदास, तुकाराम, रामप्रसाद आदि सत्पुरुष गानके द्वारा ही भगवानको वशमें कर चुके थे। भगवानने स्वयं श्रीमुखसे कहा है:—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये रवौ ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

सङ्गीतमें गान, वाद्य और नृत्य तीनोंका अन्तर्भाव होता है। परन्तु इस देशके दुर्भाग्यसे अन्य विद्याओंकी तरह इस ईश्वर-साक्षात्कार करानेवाली विद्याका भी लोप हो चला है। तो भी हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि, साधारण स्वरोंसे ही कालसर्प और हरिण जैसे पशु डोलने लगते हैं, बच्चे संगीतको सुन तल्लीन हो, सो जाते हैं और शरीर कष्ट करनेवाले स्त्री-पुरुष गान द्वारा श्रमपरिहार कर लेते हैं।

सन्तोषका विषय है कि, इस विद्याके अभ्युदयकी ओर देशवासियोंका ध्यान आकृष्ट हो चला है और यह कांग्रेससे लेकर साधारण सभाओंतक स्थान पा गयी है। बात ठीक भी है। एक संगीतसे जनतापर जैसा प्रभाव पड़ता है और वह गद्गद हो जाती है, वैसा अनेक व्याख्यानों अथवा ग्रन्थ-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पाठोंसे नहीं पड़ता। परन्तु सनातनधर्म सभाओंके उत्सवोंमें गाने योग्य गानसंग्रह अबतक दुष्प्राप्य था। इसी कमीकी अल्पांशमें पूर्ति करनेके सद्विचारसे प्रेरित होकर ही इस संग्रहका प्रकाशन हो रहा है। साक्षात्कारी महापुरुषों और सुकवियोंकी रचनाएं इसमें संग्रहीत हुई हैं। इसमें सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय आदि सब प्रधान प्रधान विषयोंकी कविताएं होनेसे सब अवसरोंपर उनका उपयोग हो सकता है। हमारा यह यत्न लोगोंको यदि कुछ भी लाभजनक हुआ, तो हम अपना परिश्रम सफल हुआ समझेंगे।

निवेदक—
संकलन कर्ता।

विषय-सूची।

—०:※:०—

विषय,	पृष्ठ,
१—मङ्गलाचरण	१
२—वेद और सनातनधर्म	३
३—निर्गुण भजन	७
४—सगुण भजन	९
५—लीला विग्रहोपासना	१४
६—चेतावनी	३३
७—देश और जाति-सेवा	४६
८—समालोचना	५६
९—नारीधर्म	६९
१०—गो-सेवा	७४

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

संगीतसुधाकर।

श्रीमङ्गलाचरण।

(१)

जय जननि भ्रमजालनिवारिणि गीतविनोदिनिताललये,
विविधवरोहण-मूर्च्छनमोहिनि हे परमेश्वरि हे विजये।
निखिल-चराचर-भूतविभाविनि पिण्डसमष्टिसरूपचये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये॥ १॥
अयि मन एव भवो विभवे वरिवर्त्ति यदीयसरूपमये,
वरमनुरूपमसि त्वमपि प्रभु यत्स्थिति-भाति-मुदा-निचये॥
भ्रमसि भवे भ्रमतो निजरूपनिरन्तरविस्मरणेन शये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये॥ २॥
पुरुषप्रधानतया जगतीगतदम्पति-युग्म-विहारनये,
निरततमा नितरामति सैव विलासिनि रासविलासकले॥
अखिल-निरञ्जन-सत्य-सनातन-रूपमयी मम सा विषये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये॥ ३।
सरभ-सप्रेम-पयोधि-निमज्जन-लब्धरसामृतपानमये,
पुलकित-मानस-भृङ्ग-यदीय-सुभक्तगणो ननु भक्तिरये॥
गुणगणगानपरो मुदमातनुते स्वरसप्तकतानलये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये॥ ४॥
परमपिता जननी जगतां भवतीह निदानमपि प्रलये,
भवभवभूतिनिदानमलं भवरक्षणसाक्षिणि कालभये॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

वितथविनाशिनि पापविमोचिनि भीतिनिवारिणि मातरये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये ॥ ५ ॥
निखिल-चराचर-भूत-विधायिनि भूतमहेश्वरि भूतधये,
जनमनआन्तरप्राणस्वरूपिणि योगनिरूपिणि योगमये ।
स्वजनविनोदिनि भक्तजनस्य सदा हृदयाम्बुजकोशशये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये ॥ ६ ॥
अखिलचराचरगामिनि साधकसाधनसाध्यसुसिद्धिमये,
सरसमनोहररूपविलासविलोकनजातललामतमे ।
ऋषिमुनयस्तव दर्शनमद्भुतमाशु नयन्ति समाधिलये,
अनुपलमेव मनो मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये ॥ ७ ॥
अनृतदृढं भ्रमजालमिदं मन आशु विदित्वा छिन्धि भये,
न पत निरन्तरमेव विलोक्य रूपवरेऽखिलविश्वमये ।
बहुविधरूपविवर्जितमां परमां प्रथितां निजरूपमये,
अनुपलमेव मनः मननं तव भक्तिरसस्य करोतु जये ॥ ८ ॥

२—गाइये गणपति जग-वन्दन । शङ्कर-सुवन भवानी-नन्दन ॥
सिद्धिसदन गज-वदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सब लायक ॥
मोदकप्रिय मुद-मङ्गल-दाता । विद्या-वारिधि बुद्धि-विधाता ॥
माँगत तुलसीदास कर जोरे । बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

३—महाशय ! गणाधिप मनाओ मनाओ । गुणावाद मिलकर सुनाओ सुनाओ ॥ करो भक्ति श्रद्धासे पूजन प्रभूका । चरनोंमें मस्तक झुकाओ झुकाओ ॥ कर स्वस्तिवाचन औ पुण्याह-वाचन । संकटके दलको भगाओ भगाओ ॥ गणेशादि देवोंकी कर पूजा अर्चा । मस्तक पै चन्दन चढ़ाओ चढ़ाओ ॥ उठा लो करोंमें न देरी लगावो, ध्वजा अब धरमकी उड़ाओ उड़ाओ ॥ कहता है जो नर कि तुमसे क्या होना । उसे अपना पौरुष दिखाओ दिखाओ ॥ खड़े हैं जो सन्मुख धरमके विरोधी ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें तर्कबलसे हटाओ हटाओ॥ करो आज उत्सव बड़ी धूमसे अब। नगारा धरमका बजाओ बजाओ॥ सभामें न आते हो जो बिन बुलाये। उन्हें आज भाई बुलाओ बुलाओ॥ कटाये हैं जिनके लिये सर बड़ोंने। सवारी उन्हींकी उठाओ उठाओ॥ कहो सत् सनातन धरमकी हो जै जै। हृदय पापियोंके कँपाओ कँपाओ॥ देरी न कर मिश्र अब शीघ्रतासे। उत्साह सबका बढ़ाओ बढ़ाओ॥

वेद और सनातनधर्म्म।

(वेद भगवान्की सवारीमें गाने योग्य)

१—है अपूर्व शोभा हमसे कही न जाती। वेदोंकी नगरमें आज सवारी आती॥ कैसा उछाह छाया लोगोंके मनमें। फूले न समाते देखो अपने तनमें॥ ईश्वरकी दयासे समय पलट गया छनमें। जग उठा धर्म्मका भाव य हर एक जनमें॥ कैसी सुन्दर रंगीन ध्वजा फहराती। वेदोंकी नगरमें आज सवारी आती॥ १॥ सब सभ्य "धर्मसंगीत" प्रेमसे गाते। चलते हैं सवारी साथ धर्म्म चित लाते॥ पण्डित प्रवीण संस्कृतमें स्तुति सुनाते। कह रहे हैं जयजयकार लोग हर्षाते॥ होती है आरती जगह जगह मन भाती। वेदोंकी नगरमें आज सवारी आती॥ २॥ जो दूर २ से पण्डित गये बुलाये। वे प्रेमभावसे संग वेदके आये॥ जिनके लेक्चर सज्जनोंके मनको भाये। सुन धर्म्म-विरोधी निज मनमें घबराये॥ अब देख देख दुर्जनोंकी जल रही छाती। वेदोंकी नगरमें आज सवारी आती॥३॥ सब उठो भाइयो दर्शनकर सुख पाओ। कुछ पत्र पुष्प-वेदोंपर मित्र चढ़ाओ॥ आरती करो श्रद्धासे सीस झुकाओ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इस शुभ अवसरका जल्दी लाभ उठाओ। यह भजनमण्डली रामरूपकी गाती। वेदोंकी नगरमें आज सवारी आती ॥ ४ ॥

२—हो चुकी जगत्में जिसकी सुनो दुहाई। उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥ जिसके वचनोंमें हुई न अबतक शंका। जिसके प्रतापका बजा एक दिन डंका ॥ जिसके वीरोंका दल था वो रणवंका। एक जरा क्रोध करनेसे भस्म हुई लंका ॥ जिसके प्रभावकी महिमा सबने गाई। उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥ १ ॥ जिसके कारन ऋषियोंने कष्ट उठाये। तज भोग वासना कन्द मूल फल खाये ॥ दानव म्लेच्छ यवनों-से शीस कटाये। पर वचन न जिसके जीतेजी बिसराये ॥ जिससे भारतकी जगमें हुई बड़ाई। उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥ २ ॥ गौतम कणाद जैमिनिसे मुनिवर जिसके। श्रीव्यास पतञ्जलि कपिलसे अनुचर जिसके ॥ गावें गुण ब्रह्मा नारद शङ्कर जिसके। अनुगामी सेवक सकल शास्तर जिसके। उत्पत्ति जगत्की जिससे हुई है भाई ॥ उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥ ३ ॥ स्मृतियां, पुराण, इतिहास तन्त्र देखे हैं। जिसके प्रमाण सारे स्वतन्त्र देखे हैं ॥ अद्भुत प्रभावके जिसके मन्त्र देखे हैं। वैसे नवीन हमने न यन्त्र देखे हैं ॥ मुनियोंने जिससे ऋद्धि सिद्धि सब पाई। उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥४॥ नर मूढ़ पंथके वृथावाद करते हैं। बिन पढ़े धर्ममें नित प्रमाद करते हैं ॥ अब भी विद्वद्जन जिसे याद करते हैं। सुमरन पण्डित माधव प्रसाद करते हैं ॥ कवि रामरूप जो है सबको सुखदाई। उस वेद पुरुषकी आज सवारी आई ॥ ५ ॥

३—वेद भगवन्! तुम हमारे पूर्वजोंके प्रान हो। रूपमें पुस्तकके हो पर तत्त्वसे भगवान हो। इस विनश्वर तनसे नर बन बैठता ईश्वरका रूप। जब उसको हो चुका पूरा तुम्हारा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञान हो ॥ ब्राह्मणोंका तेज तुममें क्षत्रियोंका वीर्य्य है ! वैश्य-कुलकी सब विभूतिकी तुम्हीं बस खान हो ॥ इन्द्रकी क्या शक्ति है जो स्वर्गमें बैठा रहे, जबके भूतल पै तुम्हारा दिव्य मीठा गान हो ॥ दुर्ग हो तुम धर्म्मके विद्याके तुम भण्डार हो। ब्रह्म-कुलके देवता औ राजकुलके त्रान हो ॥ स्वर्ग है क्या वस्तु औ पद ब्राह्म भी कुछ है नहीं। जब तुम्हारा मिश्र माधव कर रहा शुभ ध्यान हो ॥

४—चलहु सभ्यगन! धर्म्म सभामें, उपदेशक जन आये रहे हैं ॥ आज वार्षिक होत महोत्सव, धर्म्म ध्वजा फहराय रहे हैं ॥ धर्म्म भवनमें बजत बधाई, सभ्य सकल हर्षाय रहे हैं ॥ तोरण वन्दनवार, बाँधकर; कदली खम्भ लगाय रहे हैं ॥ विविध रीतिसे सभाभवनको, सज्जन मुदित सजाय रहे हैं ॥ गणपति वरुण आदि देवोंको, भक्ति विनम्र मनाय रहे हैं। सुन सुनकर व्याख्यान मनोहर, श्रोताजन सुख पाय रहे हैं। मनहु रंकनिधि लूटन लागी, सब कोई दौड़े जाय रहे हैं। वेद, पुरान-शास्त्र, दर्शनका, तत्त्वरूप समझाय रहे हैं। शास्त्र-युक्तिसे कर प्रतिपादन, गूढ़ विषय सुरझाय रहे हैं। निरा-कार साकार ब्रह्मका, सारा भेद सुनाय रहे हैं। श्राद्ध पितर प्रतिमा पूजन सब, वेदोंमें दिखलाय रहे हैं। सुन नियोग आदिका खण्डन, कुछ कुछ जन घबराय रहे हैं। इधर उधर तारें खुड़का कर, पण्डितको बुलवाय रहे हैं ॥ पण्डितवर माधव प्रसाद अब, सबको तत्त्व सुझाय रहे हैं। रामरूप यह छन्द रसीले, भरी सभामें गाय रहे हैं ॥

५—भारतके धर्म्ममण्डलको देहु बधाई। भारतमें जिसने धर्मकी धूम मचाई ॥ हे भारतीय भाई अब जागो जागो। सो चुके बहुत अब तो निद्राको त्यागो ॥ सब सम्प्रदाय उठि एक

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

प्रेममें पागो। हठ द्रोह कपट आलस्य छोड़ अनुरागो॥ मिलि धर्म सनातनकी सब करौ सहाई। भारतमें जिसने धर्म्मकी धूम मचाई॥ १॥ देखो यह धर्मकी नौका परम पुरानी। निज हाथ ईशने रचा जिसे सन्मानी॥ खेवट जिसके थे योगिराज मुनि ज्ञानी। सुख उभयलोक फल चारों माल लदानी॥ वह परि प्रमादके भँवर आज चकराई। भारतमें जिसने धर्मकी धूम मचाई॥ २॥ कलियुग समुद्र उमड़ा औ लहरें मारैं। बहु मिथ्या मत अति बात झकोरे डारैं॥ गुन आर्य्य भूप आचारज पाल न धारैं। कर डांड़ तुमारे तुम तजि कौन उबारै॥ तिसमें बारी बारी तक पहुंचा आई। भारतमें जिसने धर्मकी धूम मचाई॥ ३॥ कुछ जतन करो जिसमें न डूबने पावै। उन्नति किनारपर पहुंच तुमैं हरषावै॥ यशका हो लाभ सुख सम्पति अधिक बढ़ावै। उत्साह विमल व्यापार ज्ञान प्रकटावै॥ मन सीख प्रेमघन तुम्हें सिखाता गाई। भारतमें जिसने धर्मकी धूम मचाई॥ ४॥

६—स्वागत! स्वागत! सभ्यशिरोमणि धर्म्महेत जे आये। धन्य तिहारे मात पितुन कहं जिन जग अस सुत जाये॥ स्वागत! वीर! धर्म्मधन रक्षक! आवहु प्रान-पियारे! महापुन्य परताप सुदर्शन भये जगत उजियारे॥ धन्य दिवस यह धन्य घरी, जहं मिलन सकल भाइनको। भयो निखिल सुखकरन हरन सन्ताप दुःख दाहनको॥ यद्यपि यह आनन्द दिवस है सबै भांतिसों प्यारो। तदपि पुरातन बात याद आ उछलत हियो हमारो॥ जा हित या भारत भुविके जग जस बल बढ़े सवाये। वे ऋषि मण्डल वे नरपतिगन विधि अब सबै छिपाये॥ वह उदारता बुध विद्यामति सगरी हाय सिरानी। शेष सनातनधर्म्म रह्यो है बाकी भई कहानी॥ यही बड़नकी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

बची बड़ाई याकी रच्छा कीजै । धन सम्पत् सब जाहु जाय तो एक धर्म्म ही रख लीजै ॥ या कारन हरिचन्द नृपतिवर राज-पाट तज दीनो । बेची पतिव्रता नारी निज देह पुत्र रंग भीनो ॥ याही कारन ऋषि दधीचवर मन्त्रपूत तनु त्यागी । ह्वै प्रसन्न अस कह्यो धन्य जो धर्म्महेत यह लागी ॥ या कारन चित्तौड़-पुरीमें सोलह सहस सु-नारी । एक संग जल छार भई हा! राना कुलकी प्यारी ॥ या हित तेगबहादुरसे गुरु अरु बालक गुरु पुत्तर । इतने गये सुनेहु न जावहिं जो हम कँहहि सविस्तर ॥ याके हित जो गये रहे जग मरे अमर कहवाये । कूकर सूकर सम नर पामर तज याको विनसाये ॥ या हित मण्डल धर्म्मसभाकी सब नित कुशल मनावहु । सद्विद्या सञ्चार करहु सीखहु निज धर्म्म सिखावहु ॥ वह प्रभु दीनदयाल सुदर्शनधर रक्षक निश्चय है। निश्चय है निश्चय है निश्चय "जहां धर्म्म तहां जय है ॥

निर्गुण भजन ।

१—समष्टि अरु व्यष्टिरूपसे सर्वभूतमें है जो जन । मनन करो रे मन उन्हें श्वास श्वासमें प्रतिछन ॥१॥ यह संसार जिनहीका रूप तुम हो जिनके अनुरूप । न जानके अपना स्वरूप भ्रमसे करत भ्रमन ॥ २ ॥ वे ही हैं ब्रह्म निरञ्जन नित्य सत्य सनातन । पुरुष प्रधान वे ही देवन देव नारायण ॥ ३ ॥ प्रेमानन्द भक्तजन जिनके गुनराशि गायन । गाय गाय नाच नाच पुलक पुलक होत मगन ॥ ४ ॥ वे ही हैं आदि विश्वकर्त्ता वे ही माता वे ही पिता । अन्तमें वे ही अन्तक त्राता काल भय निवारन ॥ ५ ॥ भूतकर्त्ता भूतेश्वर भूतहारी चराचर । योगीश्वर योगेश्वर प्राणेश्वर अन्तरजन ॥ ६ ॥ करन कारन जोही

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

चराचर व्याप्त सोही। समाधिमें ऋषि मुनि जाके करहि दरशन ॥ ७ ॥ वे ही हैं द्वैत वेही अद्वैत वेही हैं रहित द्वैताद्वैत। देखो देखो देखो मन, छोड़ो मायाजाल सपन ॥ ८ ॥

(गज़ल)

२—उमेद०—तूहि तू है सब जगत्में है कहाँ पर तू नहीं ? परमाणु ऐसा है नहीं जिसमें समाया तू नहीं। आनन्दमें अठखेलियाँ करने लगा तू हृदयमें, विगड़े दिनोंमें भक्तजनका क्या सहारा तू नहीं, ?। जीव सब तेरे लिये हैं हे दयामय! एकसे, एक हैं स्वाधीन फिर क्या दूसरोंका तू नहीं ?। पुण्यका संचय हुआ तब दौड़ कर तू आगया, पतितपावन होके क्या है पापियोंका तू नहीं ?। तोड़दे परतंत्रताकी वेड़ियाँ तू पैरकी। कर्म बन्धनमें फँसा क्या तोड़ सकता तू नहीं ? ॥

(ध्रुपद)

३—गावोरे मन वही नाम, जाके रचित यह विश्वधाम, जाको नाम करत पूर्ण काम, यह विधि श्रुति गावे ॥ १ ॥ साधु जन मन जाको निवास, जाकी कीरतिको जग प्रकास, जाको रूप पुष्पनमें विकास, भावुक जन मन भावे ॥ २ ॥ जाकी दयाको नहिं पार, निराश्रयको जो अधार, जो भव सागर पार करतार, त्रिताप ताप मिटावे ॥ ३ ॥ आदि अन्त हीन निर्विकार, जाकी महिमा है अपार. थकत बुद्धि हूँ जाके विचार, मन वाक् सदा भूलावे ॥ ४ ॥

४—साकार वही है निराकार भी वही। निर्गुण भी वही सर्व गुणागार भी वही ॥ १ ॥ घट २ में प्रगट रूप अनूपमकी झलक। सबमें रमा है सबके है फिर पार भी वही ॥ २ ॥ श्रीवेद धर्म कर्मके रक्षक वही प्रभू। दुष्टोंके काल, भक्तोंके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हितकारी भी वही ॥ ३ ॥ पटको कपटके, खोल मिले श्यामका दर्शन। सुंदर दरशसे करते हैं निस्तार भी वही ॥ ४ ॥ जब जब होती धर्मकी हानी तभी तभी। बनमालि मिश्र लेते हैं अवतार भी वही ॥

सगुण भजन।

(पञ्चोपासना)

(गणेश भजन)

भजन राग भैरव।

१—गणपति विघ्न विनाशन हारे ॥ चरणकमल लम्बोदर सुन्दर। गजमुख चारु जगत रखवारे ॥ गण० ॥ उदित भानुसम कान्ति लसै तनु। लोचन तीनि लाल पट धारे ॥ गणपति० ॥ मूषक चढ़ि विचरैं जग माहीं। एक दन्त विलसै अति प्यारे ॥ गण० ॥ चोभुज बुद्धिराशि सुखदाता। भालचन्द्र नयनोंके तारे ॥ गणपति० ॥

(गङ्गाजीकी स्तुति)

२—नमो गंगे तरंगे पापहारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी ॥ १ ॥ अनेकों पापियोंको तुमने तारा, पुराणोंमें लिख महिमा अपारी ॥ २ ॥ तुम्हीं जगमातृ जगधातृ हो, तुम्हीं सन्तापहारी पापहारी ॥ ३ ॥ तुम्हीं आकाश गंगा वेदवानी, तुम्हीं धारा अनूपम रूपधारी ॥ ४ ॥ प्रकट हरिपदसे प्रविशीं विधिकमण्डल, करो पुनि शिव जटामें शोभा प्यारी ॥ ५ ॥ कृपाकर भक्तजनके दुख हरनको, धरा पै धर्मद्रव धारा पधारी ॥ ६ ॥ हंसै वह मुक्ति और निर्वाण पद पै, अलख छबिकी झलक जिसने निहारी ॥ ७ ॥ शरण बनमालि शंकर मिश्र गंगे, सुमैया तार दो नैया हमारी ॥ ८ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

(भगवतीजीकी स्तुति)

विहाग।

३—यह कौन असुर समर विजयी वामा ॥ १ ॥ काम रिपु मोहिनी, दानव कुल घातिनी, समर निपुन गुन धामा ॥ २ ॥ उलंगिनी त्रिनयनी, दानव मुण्डमालिनी, अपरूप उज्वल तनु श्यामा ॥ ३ ॥ कहत कोई दासन दास, वह रूप जाके हृद निवास, सो काल जीत बजायके दमामा ॥ ४ ॥

(सरस्वती स्तुति)

ध्रुपद।

४—नमु श्वेतसरोजवासिनी, मात वीनापानी ॥ १ ॥
तू ही विद्याप्रदायिनी, अविद्यानाशिनी ॥ २ ॥
तू ही ब्रह्मस्वरूपिनी, अद्वैतकारिनी ॥ ३ ॥
तू ही ज्ञानविकासिनी, वेद प्रकाशिनी ॥ ४ ॥

(सरस्वती स्तुति)

(राग श्यामकल्याण दादरा)

५—जयजय वागवाणि देवि, सुर नर मुनि असुर सेवि ॥
भक्तिमुक्तिदायिनी तमहरणिशारदा ॥ टेक ॥
हिमशशि सम शुभ्र अंग, नख शिख सुषमा असंग।
कमलासन शुक्लवसन, गुणविशारदा ॥ १ ॥
मुक्तामणि जटितमाल कानन कुण्डल विशाल;
शीशमुकुट लसत दिव्य, गुण अगारदा ॥ २ ॥
विमल दंड मंडितकर वीणाश्रुति नादितस्वर।
वाहन विलसत सुहंसवर उदारदा ॥ ३ ॥
हरिहर अज वेर वेर, योगी जन हेर हेर।
निरंजन नित ध्यान धरन मति अपारदा ॥ ४ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

(महाकालीकी स्तुति)

पदताल कहरवा ।

६—आली निराली महाकालीके गुण गाव, जग जननीसे नेहा लगाव, आव ॥ आली० ध्रु० ॥

देवि अवतारी अनियारी छवि प्यारी प्यारी । दरस निहारी हिये हारी, मन वारी वारी, प्रेममगनकारी, नयन उमंग वारी, आदि भवानी जगदुःख हानी जगसुखदानी तूं महारानी, सुरनर वरदायक ब्रह्मानी ।
तेरो सब ध्यान धरत गान करत असुरारी । तू ही भूभार हरत पार तरत संसारी, तोही भजे शोकतजे स्वर्ग मोक्ष साज सजे, शंभुजन काज आज देर ना लगाव ॥ आली० ॥

(महामाया भजन)

भैरव रागिनीमें गाने योग्य ।

७—भुवन मोहि लियोरे भुवन मोहिनी ।
गावत है सब ग्राम ग्राममें सा, री, गा, मा, पा, धा, नी ॥ १ ॥ जीव शरीर यंत्रसे, सुषुमुणादि तीन तंत्रसे, बजावत है गुण भेदसे तीन ग्राम संचारिनी ॥ २ ॥ छः रुप हो छः चक्रबीच, नाचत करताल ऊंच नीच, संगले छः राग रागिनी छत्तीस नाना रुप प्रकाशिनी ॥ ३ ॥ रे भ्रान्त, कर खट् चक्र भेद, रहित हो यह भेदा भेद, पहूंचि वहां नहिं पहूंचत जहाँ यह सर्व नाशिनी ॥ ४ ॥

(शिवस्तुति)

राग खंभाज ।

८—शम्भू शिवशंकर नरहर हरकर करभव तरतर पारपरे ॥ध्रु॰॥
शशि बाल भाल द्रगलाल लालकलिकाल करालके काटे जाल, लिये भूतवैताल विशालविभो विषकाल कपालकी माल गरे ॥ १ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अर्धंग अंग शिवशक्ति संग भूषण भुजंग शिरजटा गंग,
पिये भंग दंग हियेमे उमंग राजत निसंग त्रैताप हरे॥ २॥
अद्भुत स्वरूप भव भेदरूप शोभित अनूप करडिमक डूप,
सुर असुर भूप जिमिछांह धूप जगकालकूप उद्धार करे॥ ३॥
वृष वाहन सिंहासन विराज मृग चर्मबसन राजनिधिराज,
गणराज समाजले शंभुसजे सुखसाज सुकाज ये ध्यानधरे ॥४॥

(शिवजीकी आरती)

९—जय शिव त्रिपुरारी हर हर हर त्रिपुरारी,
आरतहरण महेश्वर त्रिगुण शक्तिधारी, ॐ जयशिव ॥ ध्रु० ॥
सावित्री कमलापति गिरजापति शंकर, जय गिरिजापतिशंकर,
नरपति सुरपति पशुपति त्रिभुवनपति ईश्वर, ॐ जयशिव ॥१॥
विश्वेश्वर अखिलेश्वर सर्वेश्वर स्वामी, जय सर्वेश्वर स्वामी,
जगदीश्वर काशीश्वर हर अन्तर्यामी, ॐ जय शिव० ॥ २ ॥
अविनाशी सुखराशी कैलासी बासी, शिव कैलासी बासी,
स्वयं स्वरूप प्रकाशी भक्ति मुक्तिदासी, ॐ जयशिव० ॥ ३ ॥
भवभर्ता संहर्ता जगकर्ता शंभु शिवजगकर्ता शंभु,
निजजन रंजनदाता दुखहर्ता शंभु, ॐ जयशिव० ॥ ४ ॥

(सूर्यस्तुति)

(ध्रुपद)

१०—जय प्रभाकर दिनकर ब्रह्मतेजधारी ॥ १ ॥
जय विश्वचक्षु भानु घनतिमिर कृशानु, निखिलभुवन नयन त्रितापहारी ॥ २ ॥ अनन्त किरनधारी, आकाशपथ निहारी, विमल ज्योति प्रकाशि मेटत अंधियारी ॥ ३ ॥
अंकुश पास पद्मकर, सोहत चारों चारुकर, एक चक्र सुन्दर रथ विहारी ॥ ४ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

(तुलसी भजन)

११—नमो नमो तुलसी महराणी नमो नमो हरकी पटरानी॥टेक॥
जाके दरश परश अघनाशै, महीमा वेद पुराण बखानी ॥नमो०॥
शाखा पत्र मञ्जरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लपटानी ॥नमो०
धन्य तुलसी पूरब तप कीन्हौ, शालिग्राम भयो पटरानी ॥नमो०॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक खोजत फिरे महा मुनि ज्ञानी ॥
छपन भोग धरि आगे, बिन तुलसी प्रभु एक न मानी ॥नमो०॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पनको वर्षा वरखानी ॥ नमो० ॥
प्रेम प्रीति करि हरिवस कि हे सांवरी सुरत हृदय समानी ॥
मीराको प्रभु गिरधर नागर, भक्तिदान दीजै महरानी ॥नमो०॥

विष्णु भजन।

१२—विश्वविख्यात विश्वेश विश्वायतन विश्वमर्याद व्यालादगामी। ब्रह्म वरदेश वागीस व्यापक विमल विपुल बलवान निर्वान स्वामी॥ प्रकृति महत्तत्त्व शब्दादि गुणदेवता व्योम मरुदग्नि अमलांबु उर्वी। बुद्धिमन इन्द्रिया प्रान चित्तात्मा काल परमानु चिच्छक्ति गुर्वी॥ सर्वमेवात्र त्वद्रूपं भूपालमनि व्यक्तमव्यक्त गतभेद विष्णो। भुवन भवदंश कामारिवन्दित पद द्वन्द्व मन्दाकिनी जनक जिष्णो॥ आदि मध्यान्त भगवंत त्वं सर्वगतमीश पश्यंति ये ब्रह्मवादी। यथा पटतन्तु घटमृत्तिका सर्पस्रग दारुकरि कनक कटकांगदादि॥ गूढ़ गम्भीर गुरुवन्दय गूढ़ार्थवित् गुप्त गोतीत गुरुज्ञान ज्ञाता। ज्ञेय ज्ञानप्रिय प्रचुर गरिमागर घोर संसार पर पारदाता॥ सत्य सकल्प अतिकल्प कल्पान्तकृत कल्पनातीत अहि-तल्पवासी। वनज-लोचन वनजनाभवनदा भवपु वनचरध्वज कोटि लावन्यरासी॥ सुकर दुष्कर दुराराध्य दुर्व्यसनहर दुर्ग दुर्द्धर्ष दुर्गर्ति हर्ता। वेदगर्भार्भकादभ्रगुणवर्ग अर्वाग परगर्व-निर्वाप-कर्त्ता॥ भक्त-अनुकूल भवसूल निर्मूलकर

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तूल अघ नाम पावक समानं। तरल तृष्णा तमी तरणि धरनी धरन सरन भय हरन करुणा निधानं॥ बहुल वन्दारु वृन्दारकावृन्द पदद्वन्द्व मंदार मालोरधारी। पाहि मामीश सन्ताप संकुल सदा दास तुलसी प्रनत रावनारी॥

लीलाविग्रहोपासना।

(ध्रुपद)

१—जय जय जगदीशराम, श्याम धाम पूरण काम,
आनन्दघन ब्रह्म विष्णु, सत्‌चित्‌ सुखकारी॥ १॥
कंस रावणादि काल, संतत प्रगत भक्त-पाल,
शोणित जल मुक्तमाल दीन-ताप-हारी॥ २॥
प्रेम भरण पाप हरण, अशरण जन चरण शरण,
सुखादि करन दुखादि हरण वृन्दावन चारी॥ ३॥
रमा वास जग निवास, रमा रमण समन त्रास,
विनवत हरिचंद दास, जय जय गिरिधारी॥ ४॥

(राग सोरठा)

२—ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं॥
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥
जो सम्पति दशसीस अरपी करि रावन शिवपहँ लीन्ही।
सो सम्पदा विभीषन कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही॥
तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो॥

(राग तिलक कामोद—दीप चन्दी)

३—नाथ कैसे गजको बंध छुड़ायो। यही अचरज मोहिं

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

आयो ॥टेक॥ गज और ग्राह लड़त जल भीतर। लड़त लड़त गज हार्यो ॥ जबभर सूंड रही जल ऊपर। तब हरिनाम पुकार्यो ॥ नाथ ॥ १ ॥ शबरीके बेर सुदामाके तंदुल, रुचि रुचि भोग लगायो। दुर्योधनका मेवा त्यागो साग विदुर घर खायो ॥ नाथ ॥ २ ॥ पैठ पाताल काल नाग नाथ्यो, फण पर नृत्य करायो। गिरि गोवरधन कर पर धार्यो, नंदघर लाल कहायो ॥ नाथ ॥ ३ ॥ अघासुर मार्यो बकासुर मार्यो, दावानल पान कराया, खंभ फोड़ हिरणाकुस मार्यो. नरसिंह नाम धरायो ॥ नाथ ॥ ४ ॥ अजामील गज गणिका तारी, द्रुपदीके चीर पुरायो। पयपान करत पूतना मारी, कुब्जाको रुप बनायो ॥ नाथ ॥ ५ ॥ कौरव पांडवको युद्ध रचायो, कौरव को मार हटायो। दुर्योधनको मान घटायो, मोहे भरोसो आयो ॥ नाथ ॥ ६ ॥ सब सखियन मिलि कंगन बांध्यो, रेशम गांठ बंधायो। छूटे नहिं राधाजीको कंगन, कैसे गोवरधन उठायो ॥ नाथ ॥ ७ ॥ जोगी जाको ध्यान धरत है, ध्यान धरत है, ध्यान धरत नहीं आयो। सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको जसोदाकी धेनु चरायो ॥ नाथ ॥ ८ ॥

(राग गारा—तीन ताल)

४—अँखिया हरिदर्शनको प्यासी।
देख्यो चाहत कमलनैनको, निसिदिन रहत उदासी ॥ १ ॥
आयो ऊधो फिर गये आँगन डारि गये गर फाँसी ॥ २ ॥
केसरि-तिलक मोतिनकी माल। वृन्दावनको वासी ॥ ३ ॥
काहूके मनकी कोऊ न जानत लोगनके मन हांसी ॥ ४ ॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन लेहौं करवट कासी ॥ ५ ॥

(राग बीभास—द्रुत चौताल)

५—जागिये रघुनाथ कुँवर पंछी बन बोले ॥ ध्रु० ॥ चन्द्र-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

किरण शीतल भइ, चकई पिय मिलन गई। त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव-द्रुम डोले ॥ १ ॥ प्रात भानु प्रकट भयो, रजनी का तिमिर गयो। भृंग करत गुंज-गान कमल दल खोले ॥२॥ ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुरनर मुनि करत गान, जागनकी बेर भई नयन,-पलक खोले ॥ ३ ॥ तुलसीदास अति आनन्द निरखिके मुखारविन्द। दीननको देत दान भूषण बहुमोले ॥४॥

ताल कवाली ॥

६—बन ठनके शामसुन्दर मधुबनसे आरहा है। हरएक अदा बिहारी बांकी दिखा रहा है ॥ १ ॥ नैनोंकी सैन मोहन मनको सुझारहा है। चितवनका चित्र चेतन चित्तपर खिंचा रहा है ॥ २ ॥ मुखसे मधुर सुधासम बनसी बजा रहा है। ब्रजवाम चुटकियोंपर नटवर नचा रहा है ॥ ३ ॥ हमदम बदलके तेवर रहेता कहां है अकसर। तु बिचित्ररास रचकर दुनियां ठगा रहा है ॥ ४ ॥ कहेदे तु हाल अपना हासिल कलाम सच्चा। क्यों यार कोरी कपटी बातें बना रहा है ॥५॥ हम भी तो जानते हैं तेरे दाउं घात सारे। ये अनोखी चालबाजी किसको सिखा रहा है ॥ ६ ॥ दिखला तो शक्ल अपनी ऊंची नजर मिलाकर। दानिस्ता दोस्त होकर आंखें चुरा रहा है ॥ ७ क्या प्रीतरीत इसको कहते हैं प्राण प्यारे। जिस प्रेमकी प्रथा तू जगमें चला रहा है ॥ ८ ॥ अय कान शानो शुखी अंदाजो राजतेरा। हर पहलु हुसेन खूबी जौहर बतारहा है॥ ९॥

(राग खंभाज—तीन ताल)

७—जाके प्रिय न राम वैदेही। तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी। बलि गुरु तज्यो, कंथ ब्रज बनितनि, भये

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जग मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहांलो। अंजन कहा आंखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहांलौं ॥ तुलसी सोइ सब भांति परमहित पूज्य प्रानते प्यारो। जाते होई सनेह रामपद एतो मतो हमारो ॥

गजल।

८—सांवरे घनश्याम! तुमतो प्रेमके अवतार हो। संकटोंमें फँसरहा हूँ, तुमही खेवनहारहो॥ साँवरे घनश्याम! तुम तो० ॥ आपका दर्शन मुझे इस, छविसे बारम्बार हो। हाथमें मुरली मुकुट शिरपर, गलेमें हारहो। सांवरे घनश्याम! तुमतो० ॥ चल रही आंधी भयानक, भवरमें नइया पड़ी। थामलो पतवार हे गिरिधर! जो बेड़ा पार हो॥ सांवरे घनश्याम! तुमतो०॥ नक्रपद गजके रुदनपर, भागनेवाले प्रभो। देखना निष्फल न मेरे, आसुओंकी धार हो॥ सांवरे घनश्याम! तुमतो० ॥

भजन।

९—कहीं देखोरी घनश्यामा ॥ टेक ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल झलके काना। सांवरो सुरतपर तिलक विराजै, जाइ लगे मोरे प्राना ॥ कहीं० ॥ १ ॥ बरसाने सो चली गुजरिया, नन्द ग्रामको जाना। आगे केशव धेनु चरावे, लगे प्रेमके वाना ॥ कहीं० ॥ २ ॥ सागर सुखी कमल मुरझाना, हँसा कियो पयाना। भौंरो रहिगये प्रीतिके धोखे, फेर मिलन मन आना ॥ कहीं० ॥३॥ वृन्दावनके कुञ्जगलिनमें, नूपुर रुन झुन लाना। मीराको प्रभु दर्शन दीजो, वृज तजि अनत न जाना ॥ कहीं० ॥ ४ ॥

॥ प्रभूका बालविनोद व प्रभातीका प्रमोद ॥ ताल धुमाली ॥

१०—जागो बालगोपाल लालजी प्रातःकाल प्रगटायो है ॥ जागो० ॥ यहि विधि यशुमती नन्दनन्दनको प्रेम प्रताप जनायो

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

है ॥ जागो० ॥ नाद वेद सुर साध विप्रवर निगम नेति जेहि गायो है। सो हरि सगुण स्वरूप कृपानिधि मो मन मन्दिर आयो है ॥ जागो० १ ॥ वेग उठो बृजराज बिहारी रवि प्रकाश जग छायो है। तुम बिन मोहन नेकन सूझत कर्म धर्म विसरायो है ॥ जागो० २ ॥ उर उरोज अभिलाष बढ़ावन पै प्रभव उमगायो है। मुख निरखन आनंद कंदको लालन जीया ललचायो है ॥ जागो० ३ ॥ सुनत शंभु सुखवैन कांन निज नैन निरख हरषायो है। भये परिपूरण काम शाम जब हंसि हियासों लपटायो है ॥ जागो० ४ ॥

॥ जगतपतिकी प्रेममय जाग्रत अवस्था ॥ राग असावरी ताल ३॥

११—जगतपति जागत भये घनश्याम ॥ टेक ॥ जाको जस तिहुंलोक उजागर, निशिदिन आठो याम ॥ जगत० ॥ बिगत निशा सुख भोर सुहावन, माया मोद बिनोद बढ़ावन। नाम रूप लीला दरसावन, पावन पद निज धाम ॥ जगतपति० ॥१॥ शोभा सदन मदन मद मोचन, दिव्य बदन अनियारे लोचन। सुरनर मुनिउर सोच बिमोचन, जन संतन अभिराम ॥ जगत० ॥२॥ जेहि सुमिरत दुःख दारिद भाजत, सो यशुमतिकी गोद बिराजत। उदय होत रवि आरति साजत, परछन हित ब्रजवाम ॥ जगत० ॥३॥ गोपीगण चितवत नंदनंदन, भये चकित चष प्रेम बिलच्छण। हसन फवन मन हरन उभय तन, चित चाहत विश्राम॥ जगत० ॥४॥ दृष्टि दोष निवारत मैया, वारत सर्व समेत बलैया। शंभु बिलोकत बाल कन्हैया, शरणागत निष्काम ॥ जगत० ॥ ५ ॥

॥ कृष्ण परमात्माके नामकी महिमा ॥

१२–जय जगदीश यशोदानंदन, जदुपति जनरंजन दनुजारी॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जय कमलापति कृष्ण कृपानिधि, केशव कान्ह कुंवर कंसारी ॥ १ ॥ वासुदेव वृजराज बंसीधर, बलभैया बांके बनवारी। गोपीनाथ गोविन्द गोपाला, गोकुलचन्द्र गोवर्धन-धारी ॥ जय० ॥ २ ॥ मनमोहन मधुसूदन माधव, मथुराधीश मुकुन्द मुरारी। नटनागर नंदनंदन निरंजन, नारायण नरहरि वपुधारी ॥ जय० ॥ ३ ॥ राधारमण रंगीले रसिया, रसिक शिरोमणि रासबिहारी। प्रणतपाल पुरुषोत्तम प्रभु तुम, पावन पतित परम उपकारी ॥ जय० ॥ ४ ॥ सद्गुण सरस सांवरो सुन्दर, नाम अनन्त स्वरूप अपारी। शोभा-शान्ति-सदन सुख-दायक, श्याम शरणगति शम्भु तिहारी ॥ जय ॥ ५ ॥

॥ पद–ताल ३ ॥

१३—हिलमिल हर हरि गुन गावोरी ॥ ध्रुव॥ आव प्यारी सब सुकुमारी, मोहनकी सोहनपै मदन मगन मन तन धन जोबन लुटावोरी। श्यामकी सुरत नित जीयामें बसत मोरे लगत करेजवामें घावरी, येरी सखी येरी सखी हिया हुलसाय मोरा। बांसुरीकी तान, मान ज्ञान ध्यान लेत प्राण। अधिक करारी कीन्ही कारी शम्भु डारो फांसी, रहत दरस चित चाव री मोहे रहत दरस चित चाव री ॥ आ० ॥

मालश्री रागिनीमें गाने योग्य ।

१४—मन राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है ॥१॥ कांचन काम संग त्याग रामजूके शरने लाग, संसार सुख मान मिथ्या यह झूंठो सब साज है ॥ २ ॥ सपने सा धन धाम, काहे इत करत मान, दामिनी दमक जैसे वसुधाको राज है ॥ ३ ॥ रे भूलो सुन मेरी बात, छिनपर छिन समय जात, छोड़ असत धारि सत् फिर नहीं समय जो आज है ॥ ४ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मालव रागेण रूपकतालेन गीयते।

१५—प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदं, विहितवहित्र-चरित्रमखेदम्। केशवधृतमीन शरीर! जय जगदीश हरे॥ ध्रुवम्॥ क्षितिरतिविपुलतरे तवतिष्ठति पृष्ठे, धरणिधरण किण-चक्रगरीष्ठे। केशवधृतकच्छपरूप, जयजगदीश हरे!॥ वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना, शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना। केशवधृतशूकररूप, जय जगदीश हरे॥ तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृङ्गं, दलितहिरण्यकशिपूतनुभृङ्गम्। केशवधृतनर-हरिरूप, जयजगदीशहरे॥ छलयति विक्रमणे वलिमद्भुत-वामन, पदनखनीरजनितजनपावन। केशवधृतवामनरूप, जय जगदीश हरे! क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्। केशवधृतभृगुपतिरूप, जय जगदीश हरे॥ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीयं दशमुखमौलिवलिं रम-णीयम्। केशवधृतरामशरीर, जय जगदीश हरे॥ वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं हलहति भीति मिलित यमुनाभम्। केशव-धृतहलधररूप, जय जगदीशहरे॥ निन्दसि जगविधेरहह श्रुति-जातं सदयहृदयदर्शित पशुघातम्! केशव धृतबुद्धशरीर,जय जग-दीश हरे॥ म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं धूमकेतुमिव किमपि करालं। केशवधृतकल्किशरीर जय जगदीशहरे॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं श्रृणु शुभदं सुखदं भवसारम्। केशव! धृतदशविधरूप, जय जगदीश हरे॥

॥ भगवान् कृष्णसे प्रार्थना॥

१६—तेरे पै कुरबान मेरे बांसुरीवाले आजा। खाक जिल्लतसे गरीबोंको उठाले आजा॥ देश भगतिके लिये जान गंवानेवाले। हस्ते जल्लादसे जातिको बचाले आजा॥ जिसको फुर्कत तेरी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

बेताब किये देती है । उनको प्राणेश महब्बतमें बिठाले आजा ॥ दाग लालोंके दिये गैरके हाथोंने मुझे । पड़ गये आह मेरी जानके लाले आजा ॥ जिस जमीनपर थे भरे घी दूधके सागर । बह गये आज वहां खूनके नाले आजा ॥ चश्म दिलसे जो बरसते हैं लहूके आंसू । मेरी रग रग है वहां रहते हैं नाले आजा ॥

॥ भगवान् कृष्णसे प्रार्थना ॥ गज़ल ॥

१७—भारतके जंगलोंमें वंशी बजानेवाले । दुनियामें जालिमोंके कातिल कहानेवाले ॥ मजलूम देवियोंकी इसमत बचाने वाले । मुरदा तबीयतोंको जिन्दा बनानेवाले ॥ तारीफ गूंजती है कोनो मकांमें तेरी । घर कर चुकी है अजमत पीरो जवाँमें तेरी ॥ गिरते हुओंको अक्सर तूने दिया सहारा । तू बेपरोंका पर है हमदर्द है हमारा ॥ था खूनी हाथियोंको मैदानमें तूने मारा । कीमतका हिन्दुओंकी चमका दिया सितारा ॥ ए श्याम राम है तू सूरत है रामकी तू । कहती है सारी खिलक्त सूरत है रामकी तू ॥ बिगड़ी बनाले इसकी रोती है गायमाता । बेमौत जिन्दगीको खोती है गायमाता ॥ वे आप पिसल माहीं होती है गायमाता । सब्र रोकर अपना खोती है गायमाता ॥ रो रोके वह हमारे अब दिल जला रही है । फरयाद कर रही है आंसू बहा रही है ॥ सुनता नहीं है कोई बेकसकी आह जारी । माता पै चल रही है बेदावकी कटारी ॥ लेना शरणमें इसको दुखिया ये हैं बिचारी । आंखोंमें पास व गमका अरिलय है इसकी सारी ॥ देती है हर तरफसे आवाज यह सुनाई । मोहन तेरी दुहाई मोहन तेरी दुहाई ॥

भजन

१८—वंशीवाले तू हमें दर्श तो दिखा देना । श्याम तेरे

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मिलनेका फिकर फिरको मिटा देना ॥ गृहस्थ जजाल हुआ जिसमें फंसा हूं मैं। दीनपर करके दया आ! मुझे छुड़ा देना ॥ मोहका दरिया है बना जिसमें बहा जाता हूँ। करूं सुमिरन मैं तेरा पार तू लगा देना। कहते हैं भगत तेरे भगत विहागी आजा। होते हैं जुल्म बहुत जुलमसे बचा देना ॥

॥ स्तुति गीत ॥

१९—भजिले मन राम राम राम राम रामा। राम नाम वेद मूल भजत नशत त्रिविध शूल छूटत भव श्रामा ॥१॥ राम नाम कमल फूल सन्तन मन भंवर तूल पीयत रस भूल भूल अमृत अनुपामा ॥ २ ॥ राम नाम ओंकार तुलसीको नमस्कार दीजै प्रभु भक्तिसार पल पल परिणामा ॥ ३ ॥

॥ भजन भैरवी ॥

२०—आनन्द-वन गिरिजापति नगरी, मन काहे नहिं वास लगावत रे मन। काशी समान नहीं द्वितीया पुरी ब्रह्मादि गुण गावत रे मन ॥ १ ॥ मुक्ति प्रवाह वहे जहां गंगा सुरनर मुनिहर गावत रे। सखि जगदम्बादि मन जीव भवमुक्ति करावत रे ॥ २ ॥ तुलसीदास भज गावे महादेव काली परम पद पावत रे मन। डमरू शिंगा बजावत रे मन, आनन्द वन गिरिजापति० ॥ ३ ॥

॥ राग खमाच दादरा २३ ॥

२१—मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई ॥ जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई। शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोई ॥ १ ॥ तात मात सुत न भ्रात आपनो न कोई। छांड़ दई कुलकी कान क्या करेगा कोई ॥ २ ॥ संतन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई। अब तो बात फैल गई जाने सब कोई ॥३॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अंसुवन जल सींच सींच प्रेम-बेल बोई। मीरा प्रभु लगन लगी होनी हो सो होई ॥ ४ ॥

राग कानड़ा दीपचंदी ॥ १२ ॥

२२—घूंगटका पट खोलरे तोहे राम मिलेंगे ॥ ध्रु० ॥ घट घट रमता राम रमैया कटुक वचन मत बोलरे ॥ तोहे ॥ १ ॥ रंगमहलमें दीप बरत है आसनसे मत डोलरे ॥ तोहे ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनो भई साधू अनहत बाजत ढोलरे ॥ तोहे ॥ ३ ॥

राग हमीर—तेवरा ॥ ५ ॥

२३—श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरन भवभय दारुनं। नवकंज लोचन, कंजमुख, करकंज पद कंजारुनं ॥ कंदर्प अगनित अमित छवि नवनील नीरद सुंदरम्। पटपीत मानहुं तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं ॥ भजदीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनं। रघुनंद आनंदकंद कोसलचंद दशरथ नंदनं ॥ सिरमुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंगविभूषनं। आजानु भुज शरचापधर, संग्रामजित खरदूषनं ॥ इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिवर रंजनं। मन हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गजनं ॥

राग भैरवी तीनताल ॥ ६ ॥

२४—भजमन रामचरण सुखदायी ॥ जिहि चरणनसे निकसि सुरसरी शंकर जटा समाई। जटा शंकरी नाम पस्यो है त्रिभुवन तारन आई ॥१॥ जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई। सोई चरण संत केवट धोलीने तब हरि नाव चलाई ॥ २ ॥ सोई चरण संतनजन सेवत सदा रहत सुखदाई। सोई चरण गौतम ऋषिनारी परस परमपद पाई ॥ ३ ॥ दंडकवन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनकमृगा संग धाई ॥ ४ ॥ ऋषि सुग्रीवबंधु भयव्याकुल तिन जय-छत्र धराई। रिपुकर अनुजविभीषण निशिचर परसत लंका पाई ॥ ५ ॥ शिवसनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई। तुलसीदास मारुत-सुतकी प्रभु निजमुख करत बड़ाई ॥ ६ ॥

॥ विनय ताल ३ ॥

२५—परमात्मा नित नेमसे दिन दूना धर्मप्रचार हो। तेरा प्रेमबल बढ़े दम बदम मेरी प्रार्थना स्वीकार हो ॥ मैं हूं दीन तू है दयानिधि मतिहीन मैं तु कृपानिधि। भवनिधिसे करुणासिन्धु अब मेरा शीघ्र बेड़ा पार हो ॥ १ ॥ मेरे मनमें तेरीहि भक्ति हो, मेरे तनमें तेरिहि शक्ति हो। मेरी आत्ममें वह ज्ञान दे तेरा ध्यान ही हरबार हो ॥ २ ॥ तेरे रूपकी ही रटन रहे तेरे धामकी ही लगन रहे। तेरे नामका ही भजन रहे तेरी कीर्त्तन बेशुमार हो ॥ ३ ॥ हमें वेदविद्या प्रदान हो नित सर्वशास्त्रका मान हो। हर मन्दिरोंमें पुराण हो और तेरे गुणका विचार हो ॥ ४ ॥ यह प्रसाद शम्भूको मिलै कि, वह न्यायसे न कभी टले। है यह आशा तेरी कृपा केवल सदा मुझसे पर-उपकार हो ॥ ५ ॥

२६—नाथ! ऐसा दीजे बरदान। प्रेमभाव सबके मनमें हो, आवै ना अभिमान। लोकलाज रहे कुलमर्यादा, भाईबन्धुकी कान ॥ नाथ ऐसा दीजे बरदान ॥ विद्या पढ़ें ब्रह्मचारी हों, बनें वीर बलवाने। करें मातु पितु राजकी सेवा, गुरुजनका सन्मान ॥ नाथ ऐसा दीजे बरदान ॥ क्या करता है जगतमें रहकर यह भी हो कुछ ध्यान। हृदय शुद्ध हो तव भक्ति हो जिससे हो कल्यान ॥ नाथ ऐसा दीजे बरदान ॥ ऐसा साहस

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

बढ़े धमपर देह करें बलिदान। व्याकुल प्राण जायं तो जायें, जान न पावे आन॥ नाथ ऐसा दीजे वरदान॥

॥ राग केदार—तीन ताल॥

२७—मो सम कौन कुटिल खल कामी। जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमकहरामी॥ ध्रु०॥ भरि भरि उदर विषयको धावौं, जैसे सूकर ग्रामी। हरिजन छांड़ हरी विमुखनको, निसदिन करत गुलामी॥ १॥ पापी कौन बड़ो है मोतें, सब पतितनमें नामी। सूर पतितको ठौर कहां है, सुनिये श्रीपति स्वामी॥ २॥

२८—जय कृष्णचन्द्र उदार चित्त संताप भ्रम तम नाशनम्। जय शान्ति ज्ञानस्वरूप निर्गुण सगुण ज्योति प्रकाशनम्॥ जयनाद धुन ओंकार अद्भुत नाम रूप विकाशनम्। जय वेद विदित विवेक विधि अद्वैत हृदय उलासनम्॥ १॥ जय सच्चिदानन्द त्रिगुण मायातीत ब्रह्म निवासनम्। जय प्रभो लक्ष्मीकान्त राधारमण विश्व-विलासनम्॥ २॥ जय परम पुरुष सहस्रकर पद शीश नख सिख वासनम्। जंय स्वामि सेवक भाव प्रेम प्रमोद जन जीय भाषणम्॥ ३॥ जय वासुदेव अवतार यशुमति नन्दहिय अभिलाषनम्। जय शम्भु शरण उद्धार हित कंसादि खल रिपु त्रासनम्॥ ४॥

२९—नाथ! हम तेरे बालकिशोर। प्रेमरी तिजानें नहिं केवल विनय करत करजोर। सदानन्द, आनन्दकंद, हम हैं मतिमन्द अधीर॥ दयावान् भगवान् पिलादा ज्ञान-वदरिया नीर। लगे हैं नयन तुम्हारी ओर॥ नाथ०॥ हर्ष कमल भानुदर्शन कर, भौंर जलज आधार। अलख अनूप रूप छवि भगवान्को किमि सकत निहार॥ चन्द्रबन दीजे चक्षु चकोर॥ नाथ०॥ नहीं गुप्त जगदीश! आपसे बाल-व्यथाका कोष। पर नहिं

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

आवत हमें पिताजी ! विना कहे संतोष ॥ विकल कररही प्रेमकी लोर ॥ नाथ० ॥

३०—दया हो हमपर भी भगवान। कृपादृष्टिके भूखे हैं हम संकटमें हैं प्रान ॥ कभी जहांके तारे थे जो, दुनियाके उजियारे थे जो, सभ्यजगतके प्यारे थे जो, तीन लोकसे न्यारे थे जो, ठोकरपर ठोकर खाती है उनकी ही संतान ॥ १ ॥ लोभ, मोहमें चित्त मगन है, हीन अवस्था, बुरा चलन है, तन, मन व्यसनोंके अर्पण है. हाहा कैसा अधः पतन है, इसका यह परिणाम हुआ है, बने क्लेशकी खान ॥ २ ॥ अर्जुन जैसे वीरबनें हम, रामचन्द्र समधीर बने हम, योधापुष्ट शरीर बने हम, धनीवने, गम्भीरवनें हम, देश भक्तिकी लगे गूँजने घर घर सुधुर तान ॥ ३ ॥ विद्याका आगार बने हम, जातिराष्ट्र-आधार बने हम, प्रेमी, शुद्धाचार बने हम, करुणा पारावार बने हम, पहली पदवी प्राप्त करें फिर विश्वकरे गुणगान ॥ ४ ॥

३१—मंगलकारी, प्रभु हितकारी, चहुंदिशि करुणा विस्तारी है।
कहिं चन्दन विटप सुहाते हैं, कहिं महकी केशर क्यारी है ॥
कहिं सुफल युक्त तरुवर शोभित, कहिं गन्धमयी फुलवारी है।
पक्षीगण की नाना कलरव, कर्णामृत जगको प्यारी है ॥
विनती किस भांति करें तुमसे ? नहिं गाथा गुप्त हमारी है।
यदि भोजन है तो वस्त्र नहीं, घरमें नारी बिन सारी है ॥
तन ढांक लिया तो भोजनमें, नहिं दाल और तरकारी है।
क्या भूखा नंगा रहनेको अबनाथ ! हमारी बारी है ? ॥
युरूपने पाया मान-दान, जापान चतुर व्यापारी है।
विज्ञान, ज्ञान, सम्मान, जगतमें, अमरीकाका भारी है।
तुम भूमण्डलके स्वामी हो, भारत भी भूमि तुम्हारी है।
हम भी तो इसी जगतमें हैं, अब नाथ हमारी बारी है ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

३२—यही दो वरदा मां! वरदान। ऐसे कार्य्य करें जिनसे हो भारतका उत्थान ॥ यही दो वरदा मां वरदान ॥ 'मैं हिन्दू' 'तुम मुसलमान' यह भेदभाव कर दूर, मिल हम दोनों भाई, मांके कष्ट करेंगे दूर। यही बस मनमें लें अब ठान ॥ यही० ॥ 'कष्ट बहुत हैं सह लेंगे क्या दोगे अपनी जान? हां भावी रक्षाहित तन भी कर देवें बलिदान ॥ इसीमें समझें अपनी शान ॥ यही० ॥ भारतमें विद्याका फिर अब होवे खूब प्रचार, दिन प्रतिदिन 'वसु' तुल्य करें अब अद्भुत आविष्कार ॥ सिखायें जगको फिर हम ज्ञान ॥ यही० ॥

३३—गुरुगोविन्द कब दरसावोगे तुम या यौंही जीया तरसा वोगे तुम। क्या निर्गुण नाम बतावोगे तुम या सगुण स्वरूप लखावोगे तुम ॥ तुम एक अनेक भये जबसे, मन मानलिये दुविधा तबसे। अब क्योंकर विलग रहे सबसे, सो हमको कैसे सुझावोगे तुम ॥ १ ॥ संसारमें सार विचार किया, उसने हरनाम सुधार लिया। जिसने नर जन्मको हार दिया, मायामें खूब भ्रमावोगे तुम ॥ गु० २ ॥ मैं वेद पुराण और शास्त्र सुना, सत संगतसे नित सरको धुना। जैसाके सुना वैसाही गुना भक्तनकी बान निभावोगे तुम ॥ गु० ३ ॥ क्या मुझको तुम्हारा ज्ञान नहीं, या तुमको मेरा कुछ ध्यान नही। जो शम्भु आप समान नहीं, भवभेद किसे समझावोगे तुम ॥ गुरु ४ ॥

रागसिंध काफी।

३४—प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो। समदरशी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥ध्रु०॥ इक नदिया इक नाल कहावत मैलो हि नीर भरो। जब मिल करके एक वर्ण भयो सुरसरि

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नाम पर्यो ॥ १ ॥ इक लोहा पूजामें राख्यो, इक घर बधिक पर्यो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे, कंचन करत खरो ॥ २ ॥ यह माया भ्रम जाल कहावे सूरदास सगरो। अवकि बार मोहे पार उतारो नहिं प्रणजात टरो ॥ ३ ॥

तर्ज थियेटर ।

३५—आज भारतको दुखसे निवारो। धरम करम लोप भयो, सत्य शील डूब गयो, शास्त्र गढ़त नयो नयो, तनिक अब विचारो ॥ आज० ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र आदि चारो वर्ण, निज निज मर्यादछोड़ि शोकदा अपारो ॥ आज० ॥ हे कृपाल ! नन्दलाल लेहु खबर तुम दयाल, भारत आरत विहाल, तुम ही आ उबारो ॥ आज० ॥ गजानन आये शरण जोरि पाणि बिनय करन, तुम ही छाड़ि कोऊ नाहि हितु जग हमारो ॥ आज० ॥

रागसिंध—काफीदादरा ।

३६—नामको अधार तेरो नामको अधारा ॥ध्रु०॥ मेरी मेरी करत फिरत दिन हि रैन सारा। नजर भरके देख प्राणि धुंदका पसारा ॥ नाम ॥ १ ॥ जमुनामें गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा। कालिनाग नाथ लिनो कृष्ण भयो कारा ॥ नाम ॥ २ ॥ राजा बलिके द्वारे ठाड़े वामन रूप धारा ॥ बीस भुजा रावणकी छिनमें काट डारा ॥ नाम ॥ ३ ॥ मथुरामें जन्म लिनो गोकुला सिधारा। कंसको निरवंश किनो मोर मुकुट वारा ॥ नाम ॥४॥

३८—शिव-पद-सरसिज-युगलमशङ्कं, चिन्तय मनसि सदा शुभदं। बुधदलित-भवार्जित-पङ्कम् ॥ श्रुतिपथमनुसर जहिहि कुरीतिं भावय सुमतिजनेन समं हृदि, सकल-शुभावह नीतिम् ॥ त्यज मतमनुचित-मशुभनिदानं, धारयमुनिवचनादरमास्तिक-जनकृतसद्गुणगानम् ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

॥ विनय ॥

३८—धर्मकी नावको अब जल्द उबारो भगवन् । अपने भक्तोंकी बिगड़तीको सम्हारो भगवन् ॥ कलियुगी वायु चली धर्मकी नैयाके विरुद्ध । धर्मरक्षक हो तुम्ही, कष्ट ये टारो भगवन् ॥ दुख समुन्द्रके है अन्दर ये पड़ा लाज जहाज । धर्मके बेड़ेको उस पार उतारो भगवन् ॥ ग्राहसे डूबते गजको है छुड़ाया जिसने । कर कमल आज वही अपना पसारो भगवन् ॥ इन्द्रके वज्रसे बचाय धरा गिरि करपर । अब भी टुक देशका सब क्लेश निवारो भगवन् ॥ वेदका धर्मसनातन सो भुलाया कलिने । आसुरी पन्थ चलाये हैं हजारों भगवन् ॥ धर्मकी प्रेरणा कर दीजिये सबके मनमें । या कि धरि रूप यहां वेग पधारो भगवन् ॥ मिश्र वनमाली सदा आपके चरणोंकी शरण । टुक दया दृष्टिसे मुझ ओर निहारो भगवन् ॥

॥ गजल ॥

३६—कहूं क्या आपकी महिमा रमे हो तनमें जां । होकर रगोंमें खून होकरके खूनमें मौजे रवां होकर ॥१॥ हमेसा आंख देती है खबर हर चोजकी दिलको । मगर तूं दिलमें आते हो इन आंखोंसे निहां होकर ॥२॥ हर एकको जुस्त जू वेजा है फिक्रें वस्त ला हासिल । उसे तुम मिलते हो स्वामी, जो ढूंढ़े वे निशां होकर ॥३॥ हमें आखिर मेरे प्यारे जमाल अपना दिखा देना । कहीं उस वक्त छिप जाना न मुझसे वद गुमां होकर ॥४॥ महाराजा श्रीशाविरकी विनय ये हस्त वस्ता है । हमारे खान ये दिलमें रहो तुम मेहरवां होकर ॥ ५ ॥

॥ ताल कहरवा ॥

४०—हे सुरवर, ईश्वर, जगधर, नरहर, धन धन सिर्जन-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हार ध्रु०॥ करतार, संसार,कर्ता,भर्ता और संहर्ता । भवसागर नागर, गुणआगर, महिमा अपरंपार ॥ हे० १ ॥ तुम्हरी दाया मायासे हम, पाई काया लासानी है,। जावें, ब, ली, हार, तुमपर हम हर बार, जो जगदीश्वर सुखदानी हैं ॥ आ, वो, हरिजन, मिलकर गावें, गुण निर्गुण परमेश्वरका। खू, शी, यां, म, ना, वें, सभी, कर दरशन सर्वेश्वरका। निशिदिन, पलछिन, मगन मगन, मन चरण शरण चितधार। शंभु स्वयं हितकार, जग लीला विस्तार, निगम अगम आधार ॥ हे०२॥

॥ गजल ॥

४१—जिसका मैं आशिक हुआ ओ मेरा दिलवर बन गया। वाहरी किसमत मेरा कैसा मुकद्दर बन गया ॥ध्रु०॥ मेरे दिलवरका करशमा देख लो खुद आंखसे। जो पयामे इश्क लाया सो पयम्बर बन गया ॥जिस०॥१॥ जबके मैंने छोड़ दीये दुनियांमें दौलतकी हवस। मिल गई सारी खुदाई अब तवङ्गर बन गया ॥ जिसपे० २ ॥ वखतसे उस यारकी चाहत नेकी रुतबा बुलंद। अब मेरा यावर सितारा ही सिकन्दर बन गया ॥ जिसपे० ३ ॥ जिसको चाहे आवरू वखशे मेरा परवरदिगार। देखलो मैं रूवरू जाहिलसे जोहर बन गया ॥ ४ ॥ जिसपे० ॥

(राग–श्यामकल्याण, ताल दादरा)

४२—जय हर ईशान ईश, ध्यावत सुरनर मुनीश ॥ भक्ति मुक्ति दायक, भूतेश शंकरा ॥टेक॥ जटा मुकुट शीश गंग, गिरजा अरधंग संग ॥ लोचन त्रय चन्द्रभाल, ताप तम हरा ॥ १ ॥ भूषण शोभित भुजंग, मदन भस्म लसत अंग ॥ मुंडनकी कंठमाल, प्रणत सुखकरा ॥ २ ॥ डमरूवर शूलपाणि, औढर हर अभयदानि ॥ आसन शुचि बाघम्बर, जय दिगंबरा ॥ ३ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हलाहल अंग भखत, कनक अर्क पुष्प लसत ॥ नित निरंजन ध्यान धरत, जय महेश्वरा ॥ ४ ॥

४३—क्या बसा है तू बता दे सत्य चेतन फूलमें। तुझ बिना सम्भव नहीं यह रंग रोगन फूलमें ॥१॥ ढूंढ़नेसे भी नजर आता नहीं है मित्र क्या। ब्रह्मने अपना छिपाया चारु यौवन फूलमें ॥ २ ॥ गोपियां ब्रजमें प्रहर्षित घूमती हैं फूलहित ज्ञात होता है बसा वसुदेव नन्दन फूलमें ॥ ३ ॥ पुरुष प्रकृति समान मिलकर मित्रवर बतलाइये। क्या बसे हैं कृष्ण राधा सहित मधुवन फूलमें ॥ ४ ॥ वस्तु कोई सर्वदा रहती नहीं संसारमें। रंग खुशबू ठहरती है हद दो दिन फूलमें ॥ ५ ॥ वास्तविक में प्राणप्यारे कृष्णके संयोगसे। बस गया है श्यामसुन्दर रंग सौसन फूलमें ॥ ६ ॥ देख लोचन कृष्ण मुखमें चित्तमें आया यही। बस रहा है प्रेमवश यह जोड़ खंजन फूलमें ॥ ७ ॥ ब्रह्म वासित है सदा यौं इस चराचर लोकमें। दुग्धमें घृत तैल तिलमें ज्यों सुगन्धी फूलमें ॥ चन्द्रकर्ता मध्य रहती ज्यौं क्रिया सह हेतु है। त्यों बसे हैं रंग खुशबू सब अम्बुज फूलमें ॥

भजन ५४ ॥ चौताल ध्रुपद।

४४—शंकर महादेव देव सेवक सुरजाके। ओढ़त तनसरद खाल लिपट लिपट जात व्याल, नयन विशाल अति प्रचण्ड जाके ॥ १ ॥ शंकर० ॥ गावत गुण गुण गणेश ध्यावत मुनिवर नरेश पावत नहिं पारईश ब्रह्मादिक ताके ॥ २ ॥ शंकर० ॥ सुर सुरेशचन्द्रभाल रुण्डमाल राजे भस्म अंग गौरी संग रंग भंग छाके ॥ ३ ॥ शंकर० ॥ तानसेन अति अनूप निरखत शंकर स्वरूप वारूं सखि कोटि भूप चरननपर वाके ॥ शंकर महादेव देव सेवक सुखाके।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ताल तिताला भजन राग पीलू।

४५—रघुबर तुमको मेरी लाज। सदा सदा मैं सरन तिहारी तुम बड़े गरीब निवाज ॥ पतित उधारन विरूद तिहारो श्रवनन सुनी आवाज। हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघ खण्डन दुख-भंजन जनके यही तिहारो काज। तुलसीदासपर किरपा कहिये भक्तिदान देहु आज ॥

राग गौरी तीनताल ॥ १० ॥

४६—अखियां हरिदर्शनकी प्यासी। देख्यो चाहत कमल नैनको, निशिदिन रहत उदासी ॥ १ ॥ आयो ऊधो फिरिगये आंगन डारिगये गर फांसी ॥ २ ॥ केसर-तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके वासी ॥ ३ ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हांसी ॥ ४ ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरस बिन लैंहों करवट कांसी ॥ ५ ॥

॥ तीनताल भजन ॥

४७—जय जगदीश हरे। भक्तजनोंका संकट छिनमें दूर करे। जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मनका ॥ सुख संपति घर आवे कष्ट मिटे तनका। मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी। तुम बिना और न दूजा आस करूं जिसकी ॥ १ ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी। परब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। तुम करुणाके सागर, तुम पालन करता। मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ॥ २ ॥ तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती। किस विध मिलूं गुसांई तुमको मैं कुमती ॥ दीनबंधु दुखहरता ठाकुर तुम मेरो। अपने हाथ उठावो द्वार परज तेरो ॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ावो संतनकी सेवा ॥ ३ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

चेतावनी।

भजन।

१—याद कर रोते हैं पहले पुरुषाओंको ॥यादकर ॥ सत्यव्रत हरिश्चन्द्र हुए हैं दिया राज तक दान। झूठी देती फिरे गवाही अब उनकी सन्तान ॥ यादकर० ॥ पहाड़ोंकी उन कन्दराओंमें करते ऋषि निवास। आज बसे हैं चोर उचक्के रहजन डाकू खास ॥ यादकर० ॥ भारतमें कभी हुआ करें थे भीषमसे ब्रह्मचारी। उनका कुल अब तकने लगा है हाय! पराई नारी ॥यादकर०॥ पितु आज्ञापर रामचन्द्रने छोड़ दिया था राज। पिता पुत्रमें लट्ठमलट्ठा रहने लगा है आज ॥ यादकर० ॥ सीताजीका मुख नहीं देखा भावी थे लछमणसे वीर। दशा आजकी देख हमारी जाय कलेजा चीर ॥ यादकर० ॥ उनके वास्ते दूध दहीकी नदी बही थी घरमें। हम कमबखतोंकी खातर नहीं पानी रहा अम्बरमें ॥ यादकर ॥ पुरुषा तो धनाड्य थे ऐसे स्वर्ण दान जो करते। हम पापी अब उनके कुलमें पेटसे भूके मरते ॥ यादकर० ॥ एक दुःख हो तो बतलाऊ बढ़े हैं अगिनित रोग। चक्रदोष किसका बतलावें निज पापों का भोग ॥ यादकर० ॥

भजन।

२—शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अतिभारी। एक समयमें एक पुरुष वियाहे जियादा नारी। वृद्धावस्थामें दशरथकी उसने बात बिगाड़ी ॥ शिक्षा० ॥ राजछोड़ बन गये रामने पितु आज्ञा सिर धारी। अब तो पिताके पुत्रगण चाहते हैं गिरिफ्तारी ॥शिक्षा०॥ राजमहलके सब सुखोंपर इक-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दम ठोकर मारी। बनमें गई भरताके संग सत्वन्ती सीतानारी॥ शिक्षा० ॥ विपत समयमें संग रामके की लक्ष्मण संग तैयारी। अब तो खून पीते भाईका कर रहे मुकद्दमा जारी ॥ शिक्षा० ॥ राजतिलककी गेंद बनाकर खेलने लगे खिलारी। इधर राम उस तर्फ भरत दोनोंने ठोकर मारी ॥ शिक्षा० ॥ चरणपादुका धरी तख्तपर यही बात विचारी। साधु बनकर रहा भरत नहीं बना राज अधिकारी ॥ शिक्षा० ॥ लक्ष्मण रामने सूरपनखाको क्या कहकर ललकारी। अब जहां देखे चिकनी मिट्टी फिसल जायें लेपचारी ॥ शिक्षा० ॥ लक्ष्मण शीश झुकाता था कह सीताको महतारी। हा आज कल तो भावीको कहते आधी नारी ॥ शिक्षा० ॥ कामी रावणने सीताको कष्ट दे अति भारी। फिर भी पतिव्रत धर्म बचाकर आई जनकदुलारी ॥ शिक्षा० ॥ लालच और तलवारसे डरकर सिया न हिम्मत हारी। थोड़े भयसे धर्म गवावे आजकलकी नारी ॥ शिक्षा० ॥ था पण्डित विद्वान् वह रावण देखो नहीं उधारी। मदिरा मांस परनारि हरणसे राक्षस हुआ अनारी ॥शिक्षा०॥ तन मनसे रहा सेवा करता हनुमान बलकारी। अब तो मुंहपर करें खुशामद पीछे देवें गारी ॥ शिक्षा० ॥ भक्त विभीषणने भाईकी संगत बुरी विसारी। अच्छी संगतमें तुम बैठो कहते चन्द्र पुकारी ॥ शिक्षा० ॥

गजल ।

३—कहां गया पर बतादे भारत वह पहला जाहो जलाल तेरा। कहां गई तेरी शानो शौकत किधर गया वह कमाल तेरा ॥ कहां गई तेरी वेदविद्या वह ईश्वरी ज्ञानका खजाना। अज़लमें ईश्वरने था जो सौंपा किधर गया वह माल तेरा। कहां वह ज्योतिष कहां वह मन्तिक कहां गया

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तेरा योगसाधन। फलकसे ऊपर जो पहुंचता था किधर गया वह दिव्य माल तेरा॥ कहां वह बुद्धी वह बल कहां है कहां है वह तेजकी धमक अब। कि जिससे मानिन्द मेहरे अनवर चमक रहा था जमाल तेरा। कहां गया तेरा सत्य भाषण पवित्र बुद्धि विशुद्धाचरण। कहां गई वह प्रीतम भगती कि था जो अनमोल लाल तेरा॥ समाधिक्रिया वा योग-बलसे ध्यान ईश्वरमें नित मगन था। रहे था भरपूर ब्रह्म-विद्यासे देश हरदम कपाल तेरा॥ नहीं था दुनियामें सानी तेरा हसूल इलमों हुनरमें कोई। था सब मालिकके माह कामिलसे ज्यादा रोशन जलाल तेरा॥ नहीं था तू ऐसा था शिकस्ता नहीं था ऐसा खराब खस्ता। नही था ऐसा जलील व रूसवा नहीं, जबूं था यह हाल तेरा॥ नहीं थी तुझ पै मुकद्दमावाजी नहीं थी यूं तुझमें नासबूरी। हमेशा रहता था तुझसे राजी वह रबजुलजलाल तेरा॥ ववाले जान हो रहे हैं अब तो एनाद बुग्ज़ व नफाक कीना। फजूल खर्ची व रसम बदने लिया है खून निकाल तेरा॥ दोबारा लेकर जन्म जो आवें कणाद-गौतम व व्यासादि। यकीं है सरको पकड़के रोवें जो देखें ऐसा जवाल तेरा॥ कमाल अफ-सोस हैफ हसरत कि तेरी औलाद सो रही है। नहीं है कोई जो उठके देखे कि क्यों है चेहरा निढाल तेरा॥ वकील व मुख्तार बाबू पण्डित रईस और चौधरी हैं जितने। सभीके सब तुझसे बेखबर है न कोई पुरसाने हाल तेरा॥ नकारखानेमें मिसल तूतीके ऐसी आवाज बे असर है। जगादे क्योंकर किसीको सालिक बतादे क्योंकर जवाल तेरा॥

भजन।

४—तू शहनशाह मैं दरका गदा है अजो एक तकदीरें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दो। तू तख्ततनशीन मैं खाकनिशीं है वतन एक जागीरें दो। तु जरे नसीब मैं ज़रे खाक है असर एक अकसीरें दो। तू जाहिर है मैं वातिन हूं है खाब एक तावीरें दो॥ तू बस्तीमें मैं जंगलमें है मुलक एक तामीरें दो। तू गुले चमन मैं खारे दश्त है नकाश एक तसवीरें दो॥ तु फिकरमन्द मैं दर्दमन्द है तीर एक नखचीरें दो। तू आलमस्त मैं खयालमस्त है मर्ज एक तदवीरें दो॥

राग कालिंगड़ा।

५—मूरख छाड़ वृथा अभिमान, औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिनको महिमान। भूप अनेक भये पृथ्वीपर रूप तेज बलवान। कौन बच्यो है या काल व्यालते मिट गये नाम निसान। धवलधाम धन गज रथ सेना नारी चन्द्र समान॥ अन्त समय सबहीको तजकर जाय बसे समसान॥ २॥ तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जाविध मर्कटखान। छिन भर बैठ न सुमिरन कीनो जासो होय कल्यान॥ ३॥ रेमन मूढ़ अन्त जिन भटके मेरो कह्यो अब मान। नारायण ब्रजराज कुंवरसो वेगहि कर पहिचान॥ ४॥

राग कौशिया—विलंवित तीन ताल।

६—सुमरन करले मेरे मन। तेरी बिति जाति उमर हरनाम बिन॥ कूप नीर बिन, धेनुक्षीर बिन, मंदर दीप बिन, जैसे तरुवर फलबिन दीन, तैसे प्राणी हरनाम बिन॥ १॥ देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिन, जैसे पंडित वेदविहीन तैसे प्राणी हरनाम बिन॥ २॥ काम क्रोध मद निहारो छांड़दे अब संत जन। कहे नानकशा सुन भगवंत या जगमें नहिं कोई आपन॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

राग सिंध काफी दादरा ।

७—नामको अधार तेरे नामको अधारा ॥ मेरि मेरि करत फिरत दिन हि रैन सारा । नजर भरके देख प्रानि धुदका पसारा, नाम० ॥ १ ॥ जमुनामें गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा । कालिनाग नाथ लिन्हों कृष्ण भयो कारा ॥ नाम० ॥ २ ॥ राजा बलिके द्वारे ठाड़े बामन रूप धारा । बीस भुजा रावणकी छिनमें काट डारा ॥ ३ ॥ मथुरामें जन्म लिनों गोकुल सिधारा । कंसको निरवंश किनो मोर मुगटवारा ॥नाम०॥४॥

राग वीहाग तीन ताल ।

८—नाम जपन क्यों छोड़ दिया ? क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा । सत्य बचन क्यों छोड़ दिया ? झूठे जगमें दिल ललचाकर । असल वचन क्यों छोड़ दिया ? कौड़ीको तो खूब सम्हाला । लाल रतन क्यों छोड़ दिया ॥ १ ॥ जिन सुमिरनसे अतिसुख पावे । तिन सुमिरन क्यों छोड़ दिया ? खालस एक भगवान भरोसे । तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ॥ २ ॥

भजन ।

९—जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है । कि हरशयमें जलवा तेरा हू बहू है ॥ मैं सुनता हूँ हरवक्त तेरी कहानी । कि तेरा जिकर हो रहा कू बकू है ॥ चमनमें सरोपै यह गाती है कुमरी । तेरी ही फकत रोशनी तूही तू है ॥ बिना उसके माबूद औरोंको बोलो । जबांको सम्भालो यह क्या गुफ्तगू है ॥ हरएक गुल पै बुलबुल यह कहता है खालिस । जिधर देखता हूं उधर तूही तू है ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भजन ताल झप ।

१०—तुम हो प्रभु चन्द्र मैं हूं चकोरा । तुम हो कमल-फूल मैं रसिक भौंरा ॥ १ ॥ ज्योती तुम्हारी का हूँ मैं पतंगा, आनन्द घन तुम हो मैं वनका मोरा ॥ २ ॥ एक बुन्द प्रेमका मैं हूँ पीयासा, अमृतकी करो वर्षा हरो पाप मोरा ॥ ३ ॥

गज़ल-लयेन गीयते ।

११—महत्सु धर्ममण्डलं जयेन वर्द्धताम् । प्रपालने च तस्य नो मतिः प्रवर्तताम् ॥ प्रचारयेच्च सद्गुणाञ्च ईश्वरो भुवि । श्रुतं सदत्र निर्वृतिं जयं समश्नुताम् ॥ हरौ च नः सदैव भक्ति-रस्तु निश्चला । परस्परं च मित्रता जनेषु जायताम् ॥ दिने दिने च नाशमाप्नुवन्तु दुर्गुणाः । सदर्थनेयमीश्वरेण नः प्रपूर्य-ताम् ॥ जनो हि गोपदादिपाल एष याचते । जनैर्मखेषु मानसं सदा प्रवर्त्यताम् ॥

भजन ।

१२—इतना तो करना स्वामी जब प्राण तनसे निकले । गोविन्द नाम कहकर मेरे प्राण तनसे निकले ॥ या गंगाजी-का तट हो या जमनाजीका वट हो । वह सांवरा निकट हो फिर प्राण तनसे निकले ॥ श्रीवृन्दावनका थल हो मेरे मुख-में तुलसीदल हो । विष्णुचरणका जल हो फिर प्राण तनसे निकले ॥ सर सोहना मुकुट हो मुखड़े पै काली लट हो । यह ध्यान मेरे घट हो फिर प्राण तनसे निकले ॥ उस वक्त जल्द आना निज कौल न भूल जाना । नुपुरकी धुन सुनाना फिर प्राण तनसे निकले ॥ निकले प्राण सुखसे तेरा नाम निकले मुखसे । बच जाऊं घोर दुःखसे फिर प्राण तनसे निकले ॥ जब कण्ठ प्राण आवे कोई रोग न सतावे । तू दृश्य यदि

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दिखावे फिर प्राण तनसे निकले ॥ यह नीक सी अरज है माने तो क्या हरज है। कुछ तेरा भी फरज है फिर प्राण तनसे निकले ॥ गौरीशंकरकी है अरजी आगे है तेरी मरजी। करता है यही अरजी फिर प्राण तनसे निकले ॥

दादरा।

१३—जय जय जगजननि देवि, सुर नर मुनि असुर सेवि। भुक्ति मुक्ति दायिनि भयहरनि कालिका ॥ मंगल मुद सिद्धि सदनि, पर्व सर्वरीश वदनि, ताप तिमिर तरुनतरनि किरन मालिका ॥ १ ॥ वर्म चर्मकर कृपान शूल शैल धनुषबान। धरनि दलनि दानव दल रन करालिका ॥ पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि साकिनि समेत भूतग्रह वैताल खग मृगालि जालिका ॥ २ ॥ जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनी। समस्त लोक स्वामिनी हिमशैल बालिका ॥ रघुपति पद प्रेम तुलसी यह अचल नेम। देहु है प्रसन्न पाहि प्रणत-पालिका ॥ ३ ॥

१४—तुम अपनी हस्तीको हिन्दूजनता क्यों अपने हाथों मिटा रहे हो। तो उन्नति क्या करोगे आगे जो अब रसातलको जा रहे हो ॥ है तुममें आपसकी फूट जैसी, न कोई मजहब में होगी ऐसी। यह आई गफलतकी नींद कैसी, जो अपने ही मुंहकी खा रहे हो ॥ न तुममें मिल्लत न तुममें जुर्रत, न पास इज्जत न तुमको गैरत। है सिर्फ झूठी तुम्हें हिमाकत उसीसे बुजदिल कहा रहे हो ॥ न धर्म्म कर्म्मोंका ज्ञान तुममें, न वेद शास्त्रोंका मान तुममें। फकत है धोखेकी एक टट्टी, उसीके बलपर भुला रहे हो ॥ तुम्हें तो गर्दिशने आन घेरा कि जिससे नजरोंमें है अंधेरा। क्यों ऐसे आलसमें पड़के नाहक, तुम अपना सर्वस गंवा रहे हो ॥ चलेगा यों ही

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

गुजारा कब तक करोगे ऐसा किनारा कबतक। समय परीक्षाका देख जौहर जो जान अपनी चुरा रहे हो॥

पद ताल कहरवा।

१५—कोई माने न माने मनाया करो। कोई माने न माने मनाया करो।। ध्रु० ॥ भेद भरी वेदनकी बतियां, ग्यान ध्यान बिच लाया करो॥ कोई० १॥ साम दाम भय भेद दिखाकर, नीति शास्त्र दरसाया करो॥ कोई २॥ सदाचारकी प्रथा चलाकर, सत उपदेश सुनाया करो॥ कोई ३॥ हठधर्मीका मार्ग छोड़कर, सीधी राहपर आया करो॥ कोई ४॥ इलमो अमलसे आलिम बनकर, समझो और समझाया करो॥ कोई ५॥ मिल जुल सब नर नारी परस्पर, प्रीत रीत सिखलाया करो॥ कोई ६॥ प्रेमसहित सतगुरुके प्यारे, शंभु हरगुण गाया करो॥ कोई ७॥

टोड़ी विभास रागिनीमें गाने योग्य।

१६—मानो मेरा कहना मानो भाई। जपो हरिनाम, तो तेरी बनत बनत बनी जाई॥ १॥ बालापन हंसि खेलि गवांयो, पुनि रस रंगसों माते पायो, नाहक नारि संग भ्रमायो वृथा गई सब तरुणाई॥ २॥ वृद्ध भयो कफ बात ने घेरो, पाहुन है अब सांझ सवेरो, रे जड़ मूढ़ अब शोचत है का कहा ह्वै है पछिताई॥ ३॥ कौन है पुत्र कौन है मित्र, कौन है भ्राता कौन कलत्र, अन्तकालमें हैं को काको जीवत जो की अपनाई॥ ४॥

मालश्री रागिनीमें गाने योग्य।

१७—तजो मन निज परिवारको संग। मोहित तासे होई

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

तुम करत भजनमें भंग ॥१॥ तुम्हें मोहिं तुमको ले साथ, निज काज सम्भारे तुमरे हाथ, यह बिन समुझे तुम नाहक करत उमंग ॥ २ ॥ यही है अपस्वारथ रीति, "स्वार्थ लागि करैं सब प्रीति," सब देखत हो पुनिका तुम्हरो ढंग ॥ ३ ॥ भजो हरिनाम सदा दिन रैन, तजो अज्ञान सुमिरि गुरु वैन, छोड़ विषयन विषभांति रंगा हरिपदके रंग ॥ ४ ॥

भूप रागिनीमें गाने योग्य ।

१८—पीले रे प्यारा, हो मतवारा, वह सुधा भरा हरिप्रेम घटकारे ॥ १ ॥ शुभ अशुभ कर्म्म तूं भोगन आया कौन तेरो अब तू किसकारे ॥२॥ अपने स्वारथ वस, है अब सब तेरे वस, स्वारथ मिटै कौन किसके बसकारे ॥ ३ ॥ जब लगी औसर, प्रभु गुन गा नर क्योंरे फिरत जैसे मृग भटका रे ॥ ४ ॥

गजल ।

१९—उठो भारत-निवासी जन, करो निज धर्मकी रक्षा । लगाकर अपना तन, मन, धन, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ १ ॥ बहुत दिन हो गये सोते, न अब भी होशमें होते । तजो यह नींद आलसकी, मिटावो फूट आपसकी । लो बूंटी प्रेमके रसकी, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ ३ ॥ अविद्या देशमें छाई, पुरातन रीति विसराई । इन्हें उपदेश दो भाई, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ ४ ॥ भला है राज सरकारी, सुखी इसमें प्रजा सारी । सब अपने मतके अनुसारी, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ ४ ॥ सदा जीवै महाराजा, सुलक्षण न्याय शुभ काजा । सभी जनको है सुखसाजा, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ ६ ॥ रखो वनमाली शङ्करका, परन हर अपने किंकरका । न हो भय भव भयङ्करका, करो निज धर्मकी रक्षा ॥ ७ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

गजल।

२०—अदमसे आये जो आदम जहांसे खुद अदम निकले। जिन्हें दावा है दुनियांमें, उन्हें ढूढ़े सो हम निकले ॥ ध्रु० तेरी ये चाल नाज़ुक देखकर पामाल दुनियां है। ओ बनकर नक़शपा दिलमें मेरे साबित कदम निकले ॥ अदम० ॥१॥ यहां जो कुछके है मौजूद जिसमो जान उनकी है। हमे क्या रूहकी परवाह किसी दममें जो दम निकले ॥ अदम०॥२॥ तेरे बाजार उलफतमें बने दुनियांके सौदाई। खरीदारोंने पाया तुझको आलममें सो कम निकले ॥अदम० ॥ ३ ॥ जफावोंमें तेरी प्यारी वफाका कुछ नया ढंग है। जिसे समझे थे हम जालिम वही अहले करम निकले ॥ अदम० ॥४॥ गरज दैरो हरमसे क्या है मतलब यार ज़ौहरका। हमारे काबये दिलमें ओबुत बनकर सनम निकले ॥ अदम० ॥५॥

लावनी।

२१—लाखोंमें एक इन्सान कोई कलियुगके पाये जाते हैं। जो सच पूछो तो मनुष्य भी वेदुमके पशु कहलाते हैं ॥टेक॥ कोई हमपर दोष नहीं धरना प्रत्यक्ष प्रमाण बताते हैं। जो जैसी करनी करते हैं वैसी ही गतिको पाते हैं ॥ कोई कहता है वह गीदड़सी बन्दर भपकी दिखलाते हैं। कोई पढ़े लिखे मूरखके जैसे गधेकी पदवी पाते हैं ॥ कोई निन्दक बनके विष्टाके अधिकारी सुअर कहाते हैं। जो सच पूछो० ॥ १ ॥ कोई परनारीसे विषय-भोग कामी कुत्ते बन जाते हैं। कोई क्रोधी शेर बबर बनकर औरोंको फाड़े खाते हैं ॥ कोई लोभी होकर जमा जोड़ उस धनके सांप सुहाते हैं। कोई अभिमानी भैंसे मदमाते हाथीसे बढ़ जाते हैं ॥ कोई ऊंटके जैसा कदको वढ़ा बलबलाते और चिल्लाते हैं। कोई सच पूछो० ॥ २ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कोई आशके बन्धनमें फंसकर गऊ गरीबसे नज़र आते हैं। कोई बनके बैलसे बेगारी घरका निर्वाह चलाते हैं॥ कोई कपटी कुटिल कला करके घुग्घूसी आंख दिखाते हैं। कोई मैं मैं करके बेहूदे बकरे जैसा बर्राते हैं। जो सच० ॥ ३ ॥ कोई धर्मके ओटमें बनके धूर्त और बगुलाभक्त कहाते हैं। कोई दांव घातकर बिल्लीसा औरोंका माल उड़ाते हैं॥ कोई तोता मैना और कोयलसी कोरी बात बनाते हैं। कोई बनकर उल्लूके पट्ठे बेवकूफसे नजर आते हैं॥ कोई चालाकीसे धोखेबाज कोले बनके इतराते हैं। जो सच पू० ॥ ४ ॥ कोई गिद्ध चील कौवेसा मांस मुर्दार नोंच कर खाते हैं। कोई बनके गोचड़ी जोंक लहू गैरोंका चूसे जाते हैं॥ कोई अपने स्वारथकी धुनमें घोड़ेसी दौड़ लगाते हैं। कोई बाज बहेरीसा झपट लवे चिड़ियोंको दपट दबाते हैं॥ कोई चौकन्ने चीतेकी तरह हरनोंपर चोट चलाते हैं। जो सच पू० ॥ ५ ॥ कोई मोर कबूतरसे नाजां बनके बांके इतराते हैं। कोई परवाने भौंरे मक्खीसे फंसकर जान गंवाते हैं॥ कोई आठ पहरकी डींगमार मुर्गेसी टांग अड़ाते हैं। कोई मेढ़क बन भवसागरके मगरोंसे वैर बढ़ाते हैं॥ कोई खटमल मच्छर घुन जैसे वे चक्की पीसे जाते हैं। जो सच पू० ॥ ६ ॥ ये पूर्व जन्मके जीव जगत्में मनुष जानवर आते हैं। या वर्त्तमानके पुरुष पशु-योनिमें आगे जाते हैं। ये वेद शास्त्रका भेद तुम्हें हम सहज रीति समझाते हैं। या नादानीसे कहो भैंसके आगे बीन बजाते हैं॥ सत्गुरु जो त्रिकाली ज्ञानवान शम्भू सिद्धान्त सुनाते हैं। जो सच पू० ॥ ७ ॥

ठुमरी।

२२—जब पंचमें आन प्रपंच बसे, पंचायत कौन चुका-

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

येगा। इन हठ धर्मिनके झगड़ोंको, कहो कैसे कोई निपटा-येगा॥ धनवान कहे अभिमान भरा, सरपंच हूं मैं दुनियांमें खरा। जिसे चाहे कहूं मैं भला या बुरा, मेरे आगे वो सर न उठायेगा॥ विद्वान् कहे विद्याबलसे, करूं वाद-विवाद कपट छलसे। रखूं रागद्वेष शत्रु दलसे, कोई मुझसे विजय कब पायेगा। कहे मूछ मरोड़के एक सन्डा, मैं हूँ खास बनारसका गुन्डा॥ कमजोर पकड़ करके डण्डा, क्या मुझको अकड़ बतायेगा। कहे गर्वसहित कुलवान कोई नहीं जातिमें मुझसा प्रधान कोई। अपमान करे नादान कोई, वह अपने मुंहकी खावेगा॥ कहे राजकर्मचारी नफरा, सुरराजकी गर्दन देऊं झुका। क्या मुझसे कोई ऐसा वैसा, जौहर अपना दिखलायेगा॥

ग़ज़ल।

२३—यही ऋषियोंकी भूमी है मिहरबां इक नज़र देखो। मणीमुक्तोंसे जगमग था अब अपना वोही घर देखो॥ यहां बल बुद्धि थी और वीरता दाया क्षमा भी थी। सदा पर स्वार्थोंमें अपना दे देते थे सर देखो॥ ब्रह्मचर्यका वह बल था तपस्या थी सख़ावत थी। पता अब एकका भी है जिधर चाहो तिधर देखो॥ न मित्रोंमें मुहब्बत है न विरादरमें रग़बत है। जो अपना फर्ज लाज़िम था हो उससे बेखबर देखो॥ सभी छोटे बड़ोंमें एक अविद्या ही नज़र आती। तभी तो है खराबी कुलमें आंखें खोलकर देखो॥ हमेशा अन्न अतिथोंको शरीर अर्पण भी करते थे। नहीं है पुण्य इस जां पर रहा है इक-सिकर देखो॥

शेर—दशा इस देशकी मित्रों सँभालो, प्रेम और नेमके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

पौधेको पालो। फूटके बीजको जल्दी निकालो, उठो जागो करो अरे कर्तव्यवालो॥

गज़ल।

२४—मित्र भारतवर्ष क्या हालत तुम्हारी हो गई। अब भी क्या रहा दर दरमें ख्वारी हो गई॥ क्या था करना और क्या करने लगे ऐ मित्रवर। ब्रह्मचर्यके बजाय वेश्योंसे यारी हो गई॥ कर्मों धर्मोंको उठाकर रख दिया बालाय ताख। अब तुम्हारे सर पै पापोंकी सवारी हो गई॥ चारों वर्णोंमें न हमदर्दी औ एकताई रही। पूत पिताकी राह घर घर न्यारी न्यारी हो गई॥ इस दशाको आन पहुंचे इसलिये छोटे बड़े। जो अविद्यासे तुम्हें एक फूट प्यारी हो गई॥

शेर—हम रहे आराममें जो नाम था सो मिट गया।
दर बदर हैं मारे फिरते धर्म धन भी लुट गया॥

गजल।

२५—जिस दिनसे भाइयोंमें मुहब्बत नहीं रही। भारतकी जो इज्जत थी वह इज्जत नहीं रही॥ यह बाग जहांमें था किसी रोज ये सरताज। अब आज देखिये वो लियाकत नहीं रही॥ तप दान पुण्य होते थे इस भूमिमें सदा। बढ़ने लगा अधर्म सखावत नहीं रही॥ वेदोंका प्रचार चारो तरफ आता था नज़र। अब एक रिचा पढ़नेकी ताक़त नहीं रही। हम-दर्दियोंसे कोई भी खाना न था खाली। रग़वत नहीं रही वह शराफत नहीं॥ चरचा ब्रह्मचर्य्यका वह उड़ गया सफा। अर्जुन व बाली भीमसी ताक़त नहीं रही॥ इस भूमिकामें पन्थ अनेकों खड़े हुए। श्रुति धर्म सनातनकी हिफाजत नहीं रही॥ छोटे बड़ोंमें लाज शरम कुछ भी नहीं रही। चारों वरणमें अन्दरी उलफत नहीं रही॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भजन।

२६—रे मन नाहिं भयो तू अपना ॥ धेनु धाम धन धरनी आदिक। सब मिथ्या यह जग है सपना ॥ रे मन० ॥ अन्त जीव जब निकलन लागो। मुखपर डारि दियो तब झपना ॥ रे मन० ॥ चारि जने मिलिके लैजावें। फूंकि फांकिके आगी तपना ॥ रे मन० ॥ चन्द्र भूप जग सार यही है। नाम शिवाशिवको नित जपना ॥ रे मन० ॥

राग कल्यान ताल कहरवा।

२६—सोया सो खोया जागा सो पाया प्रभुता रामकी, सोयासो० ॥ धृ० ॥ मृगतृष्णा सम लोभ लहरमें डूबे भवजलप्राणी। अज्ञानी कछु थाह न पावें पार हुआ कोई ग्यानी जी, सोयासो० ॥ १ ॥ विषय वासना काम दाम वस कामिन सब जग फांसी, निष्कामी हरिजन बन्धन तज करे मूर्खकी हांसी जी, सोया सो० ॥ २ ॥ कर्मकालवस क्रोध बलीने धीरज धर्म छुड़ाया, शान्त स्वभाव संत तेहि जीते हारासो बौरायाजी, सोया सो० ॥ ३ ॥ अहंकार धन विद्याको मद छायो शिर अभिमानी, हरिजन हो मन मस्त गर्व तज भजन करे निरबानीजी, सोया० ॥ ४ ॥ मोहममता मायामें मिथ्या जाहिल जन्म गंवाया, सतगुरु आप कृपाकर शंभु तुझको आन जगायाजी, सोया० ॥ ५ ॥

देश और जातिसेवा।

गजल।

१—हिन्दुओ तुमको परस्पर मेल करना चाहिये। कर्मवीरोंके सदृश निर्भय विचरना चाहिये ॥ देख लो गैरोंमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कितनी गैरियत और मेल है। तुमको उनके कान इबरतसे कतरना चाहिये ॥ पानीपत कोहाट और मुल्तानकी हालतको देखि। चुल्लूभर पानीमें इसदम डूब मरना चाहिये ॥ शान बाकी रह गयी दुनियांमें सिंह प्रतापकी। तुमको हरगिज भेड़ बकरोंसा न डरना चाहिये ॥ रुबरू रख लो शिवाजी औ अमरसिंहकी मिसाल। अब तुम्हें उन धीर पुरुषोंसा उभरना चाहिये ॥ पुत्र गुरु गोविन्दसिंहके और हकीकतराय सा। आनपर कुर्बानकर जांसे गुजरना चाहिये ॥ शूर अर्जुनकी तरह अब कूर्ताको त्यागकर। ज्ञानपर गीताके जौहर ध्यान धरना चाहिये ॥

लावनी।

२—हिन्दुओं करो परस्पर मेल तजो आपसकी ठेलम ठेल। अहिंसा परमधर्मको मान, बुध चाहे करें जीवकी हान ॥ चाहे वह रहें किसी स्थान मगर हैं हिन्दुकी सन्तान।

दो०—बारह बरसका भूला भटका, जो घर लौटके आये।
स्वागत करो प्रेमसे, उसका खूब बधाई बजाये ॥

समझकर बच्चोंकासा खेल। तजो आ० ॥ १ ॥ सिक्ख गुरु ग्रन्थसे प्रेम लगायें उन्हें वेदोंसे श्रेष्ठ बतायें। वह सच्चे गुरु भक्त कहलायें, वह जिनके दश अवतार बताये ॥

दोहा—वही नानक गुरुदेव दयाकर, हिन्दू धर्म्म बचाये।
उनके शिष्य उन्हीं हिन्दूके, मन्दिर देत गिराये ॥

जैसे नवसीख चलायें गुलेल। तजो आपसकी० ॥२॥ समाजी चाहे जिसे बहकायें, खूब शुद्धिकी राह चलायें, चाहे वह विधवा व्याह रचायें, चाहै वह अन्त्यजके संग खायें ॥

दो०—स्वामी दयानन्दकी भी, हरदम जै जै कार मनायें।
ईसू, भंगी, चमार मुसलिम, अपने बीच मिलायें ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मगर ना करें किसीसे झमेल। तजो आपस० ॥ ३ ॥ बुद्ध चाहे नंगे देव पुजायें, सिक्ख भी खिचड़ी अलग पकायें। समाजी अपनी टांग अड़ाये, सनातनधर्मी डींग लगायें।

दो०—अपना अपना धर्म छोड़कर करो न अत्याचार।
भला जो चाहो हिन्दूजनता देखो हृदय विचार ॥

है शम्भूका सिद्धान्त अपेल ॥ तजो ॥ ५ ॥

३—तुम्हीं हो इस उपवनके फूल विना तुम्हारे हरितदेशमें, उड़ती मानो धूल। जनता-कुञ्ज-कलेवरसूना, जो हो तुम न दुकूल ॥१॥ रंग, रूप प्यारे तुम रखना, सतत ऋतु अनुकूल। सहज सुगंध, सुरससे अपने, हरना मनके शूल ॥ २ ॥ ग्रीष्म ताप, हेमन्त, शीतसे, घबराना न फजूल ॥ विमल बसंत प्रतीक्षा-हीमें, सब दुख जाना भूल ॥ ३ ॥ ऐसे फल लाना निजबलसे, मधुमय मंगलमूल। जिनपर गर्व करे यह भारत, जाय हर्षसे फूल ॥ ४ ॥

[गजल]

४—हुये नरवीर समर धीर वीरभूमीमें। वहो समताकी सुख समीर वीरभूमीमें ॥ ज्ञानका विकाश किया प्रथम जहां आर्य्योंने। गङ्गाके तीर थे कुटीर वीरभूमीमें ॥ छाई थी सुषमा सुख सम्पद सब ऋतुओंकी। चखा स्वातंत्र्य सुधा-नीर वीरभूमीमें ॥ वस्त्रसे विहीन हुई हा! सती भारतमाता। कृष्णाकी करुणासे बढ़ा चीर वीरभूमीमें ॥ आये जो वैरी, सो काट दिये वीरोंने। हरी सब पीर हुआ धीर वीरभूमीमें ॥

[गजल]

५—भारतमें महाबीरसा अब बीर कहां है। संसारमें

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामसा गम्भीर कहां है ॥ धर्म्मी न युधिष्ठरसा न विक्रमसा न्यायाधीश। श्रीकृष्णसा कोइ साहबे तौकीर कहां है ॥ बालीसा बली और ना बलीसा कहीं दाता। दुनियांमें परशुरामसा रणधीर कहां है। नहीं भीष्म कर्ण द्रोण भीमसा है बहादुर। अर्जुनसे धनुषधारीका वह तीर कहां है। सतवादो हरिश्चन्द्र जमानेमें हैं मशहूर। दुर्वासासी जबानमें तासीर कहां है। ज्ञानी न जनक व्यास शुक नारद वशिष्ठसा। गौतमसा गुरु मोरध्वजसा धीर कहां है ॥ प्रह्लाद ध्रुव समान कहां भक्त जहांमें। गोरखसा योगी दत्तसा कोई पीर कहां है ॥ आचारी न शंकरसा न स्वामीसा दयालु। नानक निडर कबीरसा फकीर कहां है ॥ तुलसीसा गुनी सूर बाल्मीकिसा भजनी। कवि कालिदास भोजसा मतिधीर कहां है ॥ विज्ञानी सुव्रतलाल मेहरसा नहीं साधु। मूर्खोंको ब्रह्मानन्दसा नजीर कहां है ॥ 'सूरत न सही उनकीसी सोरत नसीब हो। जौहर तेरी तकदीरमें तदबीर कहां है ॥

६—चहहु जु सांचहु निज कल्यान। तो सब मिलि भारत सन्तान ॥ जपो निरन्तर एक जबान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ १ ॥ रीझै अथवा खिजे जहान। मान होय चाहे अपमान ॥ पै न तजो रटिवेकी बान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ २ ॥ जिन्हें नहीं निजताका ज्ञान। वे जन जीवित मृतक समान ॥ यातें गहु यह मन्त्र महान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ३ ॥ भाषा भोजन भेष विधान। तजै न अपुनो सोई मतिमान ॥ बस समझो सौभाग्य प्रमान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ४ ॥ धनि है वह धन धनि वे प्रान। जे इन हेतु होइ कुरबान ॥ यही तीन सुख सुगति निधान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ५ ॥ तिहूं लोकपर पूज्यप्रधान। करिहैं तव त्रिदेव

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

इव ग्रान ॥ सुमिरो तीनहु समय सुजान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ६ ॥ सरबसु जाइ दीजिये जान। सब कछु सहिये बनि पाषान ॥ पै नहि रहिय प्रेम प्रन ठान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ७ ॥ तबहि सुधरिहै जनम निदान। तबहि भलो करिहै भगवान् ॥ जब रहिहै निशिदिन यह ध्यान। हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान ॥ ८ ॥

७—हमें दो मां! ऐसा बरदान। बन सुपुत्र हिन्दमाताके तेजस्वी गुणवान ॥ बुद्धिमान हों, शक्तिवान हों, हों धनवान सुजान। चरणकमलके तेरे माता! हों सेवक शुचिमान ॥ चाहे जहां रहें पर हमको हो भारतका ध्यान। सुनें सदा ही निज कानोंसे, शुभ स्वराज्यकी तान ॥ भरा हुआ हो अंग अंगमें, भारत गौरव मान। उसकी रक्षामें हम कर दें, अर्पण अपने प्राण ॥ मरें, भस्म भी गावे प्रतिदिन, प्यारा हिन्दुस्तान। कण कणसे, स्वतन्त्र भारतकी, निकले मीठी तान ॥ ध्येय, गेय, उद्देश्य हमारा, हो स्वदेश-कल्याण। करें दीनजन त्राण बने सब भारतके प्रिय प्राण ॥

८—मरत है भारत हाय पियासन। उर्द्ध सांस लै हिचकि रह्यो है, निर्मल जलकी आसन ॥ मरत० ॥ नहिं चाहत यह जल गुलाबको, नहिं उसीरकी वासन। सत्यधर्म गंगाजल चाहत, डरत जासु यम त्रासन ॥ मरत० ॥ सांचो पूत कोऊ नहिं याको, सम्भव पौरुष जासन। सुकवि नाथ तुम ही हो रक्षक, घट घटके परकासन ॥ मरत० ॥

९—है कैसी कजरी यह भाई? भारत अम्बर ऊपर छाई ॥ मूरखता, आलस, हठके घन, मिलि मिलि कुमति घटा घिर आई ॥ बिलखत प्रजा विलोकत छन छन, चिन्ता अन्धकार अधिकाई। बरसत वारि निरुद्यमताको, दारिद दामिनि

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

द्युति दरसाई ॥ दुख सरिता अति वेग सहित बढ़ि, धीरज विपुल करार गिराई। परवसता तृन छाय लियो छिति, सुखमारग नहिं परत लखाई ॥ जरि जवास जातीय प्रेमको, वैर फूट फल भल फैलाई। छुधा रोगसों पीडित है नर, दादुर हाहाकार मचाई ॥ फेरि प्रेमघन गोवरधन धर, दौरि दया करि करहु सहाई ॥

वन्दे मातरम्।

१०—सुजलां सुफलां मलयज शीतलां शस्य-श्यामलां मातरम्। शुभ्र-ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीं, फुल्ल कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीं, सुहासिनीं सुमधुर-भाषिणीम्। सुखदां वरदां मातरम्। त्रिंशत्कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले, द्विंत्रिंशत्कोटि भुजैर्धृतखर करवाले, कथयन्ति जनास्त्वां कथं मातः! अबलाम्? बाहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं रिपुदल-वारिणीं मातरम्। त्वमेव विद्या त्वमेव धर्म्म, त्वमेव हृदयं त्वमेव मर्म्म, त्वंहि प्राणाः शरीरे। बाहौ मे त्वमेव शक्तिः, हृदये मातस्त्वमेव भक्तिः, तव प्रतिमा प्रतिमन्दिरे। त्वंहि दुर्गा-दश-प्रहरण धारिणी, कमला कमलदल-विहारिणी वाणी, विद्यादायिनी नमामि त्वां। नमामि कमलाममलामतुलां सुजलां सुफलां मातरं। वन्दे मातरम्। श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम् धरणीं भरणीं मातरम्।

११—पसे मुर्दन भी होगा हश्रमें यह ही वयां मेरा। मैं इस भारतकी मिट्टी हूँ यही हिन्दोस्तां मेरा॥ मैं इस भारतके एक उजड़े हुए खंडहरका जर्रा हूँ। यही पूरा पता मेरा यही है कुल निशां मेरा॥ खिजांके हाथसे मुरझाये जिस गुलशनके हैं पौदे। मैं इस गुलशनकी बुलबुल हूँ यही है गुलसितां मेरा॥ अगर यह प्राण तेरे वास्ते ए देश! ना

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जायें। तो इस हस्तीके तख्तेसे मिटे नामों निशां मेरा ॥ मैं तेरा हूं, सदा तेरा रहूंगा, बावफा खादिम। तुही है गुलसितां मेरा तुही जन्नत निशां मेरा ॥ मेरे सीनेमें तेरे प्रेमकी अग्नि भड़कती है। निगाहोंमें मेरी भारत तुही है कुल जहां मेरा ॥

१२—जय जय जय जन्मभूमि जननी! मम प्यारी। जलकी जहं बहत धार, डोलत शीतल बयार, गिरिवन शोभा अपार, अनुपम छवि वारी। जय जय जय जन्मभूमि० ॥ १ ॥ उपजत जहां विपुल धान, केसर फल फूल पान, पक्षीगण करत गान, हरषित नरनारी, जय जय जय जन्मभूमि० ॥ २ ॥ प्रगटे जहां जनकराय, त्रिभुवन यश रह्यो छाय, है विदेह सब विहाय, ज्ञानी अति भारी। जय जय जय जन्मभूमि० ॥ ३ ॥ चन्द्रगुप्त नृप महान्, नानक सम नीतिमान, भये जहां गुण-निधान, जाऊं बलिहारी। जय जय जय जन्मभूमि० ॥ ४ ॥

१३—सारे जहांसे अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा। हम बुल-बुलें हैं इसकी, यह बोस्तां हमारा ॥ १ ॥ गुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें। समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा ॥ २ ॥ परवत वह सबसे ऊंचा, हम-साया आसमांका। वोह सन्तरी हमारा, वोह पासवां हमारा ॥ ३ ॥ गोदीमें खेलती हैं, जिसके हजारों नदियां। गुल-शन है जिनके दमसे, रश्के जिनां हमारा ॥ ४ ॥ अय आवेरोहे गङ्गा! वोह दिन है याद तुझको। उतरा तेरे किनारे, जब कारवां हमारा ॥ ५ ॥ मजहब नहीं सिखाता, आपसमें वैर रखना। हिन्दी हैं हम, वतन है, हिन्दोस्तां हमारा ॥ ६ ॥ यूनानी, मिसरो, रोमा, सब मिट गये जहांसे। अबतक मगर है बाकी, नामो निशां हमारा ॥ ७ ६ ॥ कुछ बात है कि हस्ती,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

मिटती नहीं हमारी। सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा ॥ ८ ॥ 'इकबाल' कोई मरहम अपना नहीं जहांमें। मालूम क्या किसीको दर्दे निहां हमारा ॥ ९ ॥

१४—हो रहा है आजकल भारत तो गारत फूटसे। जा रहा है खुद रसातलको ये घरकी फूटसे ॥ हो गये मुहताज हरएक दाने दानेके लिये। मिल गया फल अब तो पूरा आपसोंको लूटसे ॥ पेटके खातिर जो बन बैठे गुलामीके शिकार। गमके गोले खाते हैं पीकर लहूके घूंटसे। चल गया है हिन्दमें यूरपका सब नकली रिवाज। बन गये मिस्टर विदेशी माड़ सजकर सूटसे ॥ ब्रूश और पालिससे जोहर अपना फैशन देखकर। रुसियाह बनकर चमकते हैं विलाती बूटसे ॥

[illegible]—पवित्र भारतके वीर पुरुषो! जो धर्म अपना निवा-[illegible]होगा। मिटायें आपसकी फूट हिन्दू तो मेल करके [illegible]ताना होगा ॥ सराय दुनियांको छोड़ जिस दम जो आगे ईश्वरके जाना होगा। करो न आज्ञा उसीकी पालन तो क्या तुम्हें मुंह दिखाना होगा ॥ मिलेगा हरगिज न स्वर्ग तुमको जो धर्म–मारगको त्याग दोगे। यकीन मानो तुम्हारे खातिर तो नर्कहोमें ठिकाना होगा ॥ अगर न समझोगे फर्ज़ अपना, जो इस समयपर यह याद रक्खो। पड़े रहोगे जो बनके काहिल, तो तुम न होगे जमाना होगा ॥ जो गैर मन्दिरका तोड़ डाले, जो देवप्रतिमाको फोड़ डाले। जो आगे रुस्तम भी आवे उसदम, तो जान जौहर लड़ाना होगा ॥

१६—आइये भगवन्! यहांपर आज स्वागत आइये। इस अभागे देशको सबसे अधिक अपनाइये। है अविद्याकी निशा नहीं सूझता कुछ है प्रभो, वेदविद्यासे सुमारग अब

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

हमें दिखलाइये ॥ गिर चुके हैं ज्ञानके उंचे भवनसे निम्नमें, कर दया देके सहारा फिर वहीं बैठाइये ॥ द्वेषमें आगे हैं सबके ऐक्यमें पीछे पड़े, मूढ़ताके भक्त हैं कुछ तो हमें समझाइये ॥ आपसे पुरुषोंका आना सूचना सौभाग्यकी, त्यागकी महिमा दयामय आपहीमें पाइये । बुद्ध शंकरसे महाजन करगये उपकार जो, मिश्र माधव आप भी मत भूल उसको जाइये ॥

१७—हे सभ्यगण ! निजवीरता, तुम्हें यादहो कि न याद हो । वो जो तुममें गुण थे कहूँ मैं क्या, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ १ ॥ हरिचन्दसे दानी थे तुम, सुरराजसे मानी थे तुम, सुखकर थे शंकरसे सदा, तुम्हें याद० ॥ २ ॥ जो आपका नितकर्म्म था, औरोंको वोही धर्म्म था, थी ऐसी यां पर सत्यता, तुम्हें याद० ॥ ३ ॥ प्रत्येक जन हरिभ[illegible] जगमें न चित अनुरक्त था, छल कपटसे अतिवैर था, [illegible] ॥ याद० ॥ ४ ॥ निजधर्म्मका अनुराग था, इस देशका सौ[illegible] भाग था, थी पास पूरी सम्पदा, तुम्हें याद० ॥ ५ ॥ कभी तुम भी मित्र स्वतन्त्र थे । नहिं पापसे परतन्त्र थे, तुमपर न थी कोई आपदा, तुम्हें० ॥ ६ ॥ डरसे कोई डरता न था, खटियामें पड़ मरता न था, वो जो उस समय थी वीरता, तुम्हें० ॥ ७ ॥ निजताका सबको ज्ञान था, निज देशका अभिमान था, तब कब यहां थी यह दशा, तुम्हें० ॥ ८ ॥ बातें सनातनधर्म्मकी, जो भेदकी औ मर्म्मकी, समझो सुनो हमसे जरा, तुम्हें० ॥ ९ ॥ जिस देशकी हो दुर्दशा, वां भोग मुक्ती है वृथा, यह धर्म्मका सिद्धान्त था, तुम्हें० ॥ १० ॥ है बात यह अतिखेदकी, भूले हो बातें वेदकी, वह पूर्वजोंकी सब प्रथा, तुम्हें० ॥ ११॥ फलमूल खाये वनमें जा, पर वेदरक्षा की

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

अहा, तुम उनकी हो सन्तान हा, तुम्हें० ॥ १२ ॥ शङ्कर कुमारिल थे जहां, अब हो गया है क्या वहां, निज जन्म-भूमीकी व्यथा, तुम्हें० ॥ १३ ॥ इस धर्म्मरक्षामें सुभट, चित्तौ-ड़में गये कितने कट, आवरण देखो पत्रका, तुम्हें० ॥ १४ ॥ विधवा पतीके संगमें, ला अग्नि अपने अङ्गमें, लाखों जली हैं पतिव्रता, तुम्हें० ॥ १५ ॥ लड़की वो आलमगीरकी, शिवपुत्र सम्भाने न ली, दिल्लीमें देदी जीभ जा, तुम्हें० ॥ १६ ॥ गुरुओंने सर तलवारको, और सुत दिये दीवारको, पर धर्म्म छोड़ा अपना ना, तुम्हें० ॥१७॥ पूंजी बची खोते हो क्यों? अब जाग-कर सोते हो क्यों? यह मिश्रने तो सुना दिया, तुम्हें० ॥ १८ ॥

मातृपूजा ।

[illegible]—सुधा फलप्रदायिनीम्, सुधारसप्रवाहिनीम् । सदा [illegible] सादरम् स्वजन्मभूमि मातरम् ॥ १ ॥ महर्षि सिद्धि [illegible]ताम् अगस्त्य पुण्य पाविताम् । सदा नमामि सादरम् स्वजन्मभूमि मातरम् ॥ २ ॥ विचित्र पुष्प पल्लवाम्, कवी-न्द्र वृन्द वल्लभाम् । विहंग कोटि कूजिताम्, नमामि विश्वपूजिताम् ॥ ३ ॥ स्थिरा रमा मनोरमाम्, गुरुत्तमा महत्तमाम् । नमामि तां निरन्तरम्, स्वजन्मभूमि मातरम् ॥४॥ अशेष शस्य शालिनीम् , अनन्त रत्नमालिनीम् । क्षुधा तृषा रुजाहराम्, नमामि मातरम् धराम् ॥ ५ ॥ पुराण वेद कीर्ति ते, नमोस्तु मातृभूमि ते । त्रिलोक लोक वन्दिते, नमो नमोस्तु देवि ते ॥ ६ ॥ प्रदायते सजीविताम् , करोतु जन्मभूहितम् । अशेष देश पावनम्, नमामि तस्य जीवनम् ॥ ७ ॥

स्वराज्य संगीत ।

१९—हमारा निश्चय है उत्थान । अब 'स्वराज्य' का समय

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

निकट है दुखका है अवसान ॥ हमारा० ॥ स्वाभिमानसे पूर्ण हो रहे भारतके सन्तान। अब पलभर भी हम न सहेंगे जन्मभूमि अपमान ॥ हमारा० ॥ सबल करोंमें देख हमारे आयुध प्रखर कृपाण। कांप उठेगा नीच शत्रुदल तज निज बल अभिमान ॥ हमारा० ॥ जय स्वतन्त्र भारत कहते हम गावेंगे जयगान। भूमण्डलमें वन्दित होंगे हिन्दी हिन्दुस्तान॥ हमारा निश्चय है उत्थान ॥

२०—पुनः हो भारतका उत्थान। अर्जुन भीम द्रोण सम होवें भारतसुत बलवान। हरिश्चन्द्र, दशरथ, बलि सम हों सत्य प्रतिज्ञावान ॥ पुनः हो० ॥ १ ॥ ब्राह्मण पढ़ें वेद क्षत्रिय हों शूरवीर गुणवान। वैश्य करें वाणिज्य शूद्र हों स्वामीभक्त सुजान ॥ पुनः हो० ॥ २ ॥ राग अलापें एक भावका तजकर फूट महान। गूंज उठे [illegible] स्वदेशमें देशभक्तिकी तान ॥ पुनः हो० ॥ ३ ॥ [illegible] ४ ॥ हों धर्मवीर हों, नीतिनिपुण विद्वान्। कलाकुशल [illegible] धैर्यवान हों भारतकी सन्तान ॥ पुनः हो० ॥४ ॥ सर्वदेश गावें प्रभुवर फिर भारतके गुणगान। किसी तरह हो नाथ! करो तुम अब इसका कल्याण ॥ पुनः हो० ॥ ५ ॥ हम फिरसे संसार क्षेत्रमें पावें उच्च स्थान। भारतभूमि सुखी फिर होवे यह कह दो भगवान् ॥ पुनः हो० ॥ ६ ॥

समालोचना।

१—हमसे परे रहो तुम यार, नकली हिन्दु कहाने वाले ॥ ध्रु० ॥ तुम्हें नहिं विदित वेद वेवहार, न जानो प्रेम नेम आचार। न तुम्हें दया धर्म उपकार, शास्त्र मरियाद मिटाने वाले ॥ हम० ॥ १ ॥ तुम्हारे सर सवार अज्ञान, नहिं सद

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विप्र धेनुका ध्यान । करो तुम नीच ऊंच अभिमान, राग और द्वेष बढ़ाने वाले ॥ हम० २॥ कमीने नई निकाले चाल, लिये एक सूत्र गलेमें डाल। जिन्हें नहीं अपने पिताका खियाल, पूत कलजुगी घरोने वाले ॥ हम० ३ ॥ जीव हिंसाका नहीं विचार, करो निन मछली मांस अहार। धरो क्यों जगदम्बापर भार, श्वानसे हाड़ चवाने वाले ॥ हम० ४ ॥ कहाते द्विजकुलके अवतंस, बने अब बगले होकर हंस। घटाये ब्रह्मवंसका अंस, अन्यथा प्रथा चलाने वाले ॥ हम० ५॥ तुम्हारी बात तुम्हारे हाथ, छोड़ दो हठधर्मीका साथ। न लो कोई कलंक अपने माथ, है शंभुनाथ सुझाने वाले ॥ हम० ६ ॥

पद ।

२—न ईश-भक्ती न प्रेम-शक्ती लगे बनावटके गीत गाने। ...ल और पढ़े न पिंगळ चले कवीश्वर भजन बनाने। ...ारी न कर्म्मचारी न शील-शान्ति परोपकारी। न ...विद्या न शास्त्रशिक्षा न पूरे पंडित चतुर सयाने ॥ १ ॥ न काम क्रोध अरु लोभ त्यागे, न मोह मोदकी नशासे जागे। न भ्रान्ति भवभय विषयसे भागे, न आशा तृष्णा लगी ठिकाने ॥ २ ॥ न योगी ध्यानी न वशमें वानी, कथन करें मनगढ़त कहानी। न सत्यवक्ता न तत्त्वज्ञानी, लगे जगतमें गुनी कहाने ॥ ३ ॥ न इष्टसिद्धी न श्रेष्ठ बुद्धी न साधु संगत न आत्म-शुद्धी। करे न शम्भू जो ज्ञानवृद्धी तो प्राणि ईश्वर गती न जाने ॥ ४ ॥

॥ फुटकर समाज खण्डन गज़ल ॥

३—नया मज़हब समाजी चन्द दिनसे खोल बैठे हैं। मिलाकर संग रजीलोंको बना निज गोल बैठे हैं॥ कहीं गदहे भी धोनेसे गऊके पुत्र होते हैं। मसल है वानी कोयलकी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

ए कौवे बोल बैठे हैं ॥ हजारों वर्ष ऋषि औ मुनि तपस्या करते थे अजहद। हमारे भाई निर्गुनतत्त्व पलमें तोल बैठे हैं ॥ हरीचन्दने धरमके वास्ते लाखों सहे सदमें। नये मत पंथ वाले अब धरम ले मोल बैठे हैं॥ यही ऋषियोंकी थी भूमी प्राण देती थी पतिके संग। उन्हीं विधवोंको अब प्याले जहरके घोल बैठे हैं॥ रचा एक ग्रन्थ स्वामीने उसीको वेद-मत माना। बहुतसे मंत्रके अर्थोंको वो कर गोल बैठे हैं॥ न मानों तो दिखादे हम लिखा जो कुछ दयानन्दने। सनातन-धर्म वाले सब इसे टकटोल बैठे हैं॥ जनेऊ वालोंको छोटे बड़े ऊंचा समझते थे। धरमके चिन्ह सचमुच आप बिल-कुल घोल बैठे हैं॥

॥ गजल ॥

४—वीर भारत-भूमिपर क्या आर्य्यमत बो[illegible] ॥ अं० ॥ शास्त्र बांधे धर्मकी जड़ सर बसर खोने लगे॥ ये[illegible], [illegible] शेर सोया था जहां आराममें। कौए उड़कर शीसपर अब [illegible] टोने लगे॥ मात अवनी आज तेरे देखते होता गजब। एक स्त्रीके पती ग्यारह तलक हैं होने लगे॥ हे कन्हैया! गिरि उठैया बृज बचैया हो कहां। क्या सघन कुंजन लतनमें जायकर सोने लगे॥ नाथ अब छोटे बड़ोंसे दुख सहा जाता नहीं। अपने दामन आसुओंसे हाय अब धोने लगे॥

॥ दादरा ॥

५—आर्य्य बननेको कैसे दिवाने हुए॥ अं० ॥ पिता ऋण-से मूंह मोड़। मूर्ति-पूजनको छोड़। हठधर्मीको मनमें है ठाने हुये॥ खान पानको न ज्ञान 'कहत झूंठे हैं पुरान' यह उनका अनुमान बिना जाने हुए॥ निज धर्मको विचार 'रहो इनसे होशियार' मनु अधरमके यह अब निशाने हुए॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

गज़ल ।

६—भलेको जो बुरा समझे, बुरेको जो भला समझे। वही जड़ अन्तमें मरकर, नरककी आपदा समझे ॥ १ ॥ अकिल मारी गई इससे, नहीं पापी ज़रा समझे। नहीं जो मानता मूर्त्ति, वह अपनेको मरा समझे ॥ २ ॥ बना है काठका उल्लू, दिवसको जो निशा समझे। वही कम्बखत इमलीको, सरासर आमड़ा समझे ॥ ३ ॥ जिसे हो ज्ञान चेतनका, वही जड़में प्रभा समझे। भला जो आप पत्थर हो, वही पत्थरको क्या समझे ॥ ४ ॥ जगत्में चन्द्र अपनेको, गिरिशका टहलुआ समझे। सदा परमार्थमें अपनी, महेश्वररूपता समझे ॥ ५ ॥

थियेटर दादरा ।

[illegible]ाता पुराण वेद नेति नेति जाको मूरतिमें तिसको [illegible] । अं० ॥ शुद्ध चित्तसे पूजन करते फिर जो ध्यान लगाने [illegible] ज्योंकी त्यों भाषे आत्मामें परमात्माको पाते हम ॥ जो मूरती हो मूर्तिखण्डन करते उलटा गाते तुम, जगमें कोई मूर्ति विना ना सबूत क्या दिखलाते हम ॥ यही सार सत्शास्त्रका हैं 'मनु' स्मृत्यादि दिखाते हम. साकार बिन कोई निराकार नहिं पाता यही बताते हम ॥ १ ॥

८—बरजैं हमैं मूरतिपूजनको अपनी जड़ता न निवारत हैं। खिचवाय गुरुघण्टालको चित्रहि नेहसों नीके निहारत हैं ॥ गुन याद कै ताके भलीविधिसों अँखियानसों आँसू ढारत हैं ॥ लखि धूरता ऐसे पाखण्ड समाजकी भारत ह्वै रह्यो आरत है ॥

६—मानो जगदीश्वरकी मूर्ति वरना ध्यान लगाना छोड़ो। अं० ॥ का 'ख़ा' अक्षर वर्ण अरूप, इनके फर्जी वर्ण सरूप, मानो

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नहिं अरूपका रूप तो पढ़ना और पढ़ाना छोड़ो । स्वामी देते थे व्याख्यान, करते खान पान प्रस्थान, यह कुछ कहे न करे, इससे चित्र बनाना छोड़ो ॥ आंखें मीचे अन्ध समान, करते निराकारका ध्यान, होता अन्धकार ही भान, विरथा वक्त बिताना छोड़ो ॥ वो ही सज्जन है वचनेश, राखैं एकै रंग हमेश, तुम यह तजो दुरंगी भेष, वरनः आर्य कहाना छोड़ो ॥

१०—धृतिरूपी जलसों न्हवाय क्षमा अङ्ग पोंछ दमरूपी चंदनको तिलक दै दीजिये । अस्तेय वस्त्रन सजाय शौच भूषणादि इन्द्रियको निग्रहसो सुमन पतीजिये ॥ धीर धूप देके पुनि विद्या नैवेद्य लाय सत्यरूपी आरती उतार जुग जी जिये । दृढ़ विश्वासरूपी शम्भुको विठाय 'मनु' ऐसे मन-मन्दिरमें सूरतिको पूजिये ॥ ३ ॥

अवतार ।

११—त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमारो उत वा कुमारी । त्वं जीर्णो दण्डेन वंचसि त्वं जातो भवति विश्वतो मुखः । अथर्व वे० का० १० अ० मं० ४ २७ ।

व्यापक ब्रह्म अनादि आप अज ईश अनामय, अप्रमेय अविचिन्त्य सच्चिदानन्द सदाशय ॥ निज इच्छानुसार सुकृतिहित सगुन रूपधर । लै अनेक अवतार हरत अघ साधु त्राणकर ॥

गज़ल ।

१२—होता न सगुन रूप तो संसार न होता । गुल होते ही नहीं खुशबूका इजहार न होता ॥ अं० ॥ जो बागे जहांमें नज़र आते हैं हर इक रंग । साकार न होता तो निराकार न होता ॥ किसका हो स्मरन औ ध्यान कैसी समाधी, हरशयके

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कमोवेशका मिक़दार न होता॥ जो है नहीं प्रत्यक्ष तो उसका प्रमान क्या, होती न धूप छायाका आधार न होता॥ होता नहीं मजाज़ी तो आता हकीकी क्यों, दिल ही अगर नहीं है तो फिर प्यार न होता॥ होता न अगर चोटके सहनेको ये जिगर, हरगिज़ निशानेबाजोंका फिर वार न होता॥ संसारमें केशवको 'मनु' सब जानते सुजन। भूभार न होता तो ये अवतार न होता॥

गज़ल

१३—मैं सदा तैयार हूं भारतमें आनेके लिये, पर कोई शाकी नहीं मुझको बुलानेके लिये॥ अं०॥ द्रोपदीकीसी है ना कोई सती नारी यहां, अर्जुन न कोई आऊं जो गीता सुनानेके लिये॥ है बिदुरकीसी न भक्ती ना सुदामाकासा प्रेम, भीलनीसी [illegible] ऊं बेर खानेके लिये॥ है यहां हरशयके दिलमें देख लो [illegible]सद, हर बसर बैठा है भाईको जलानेके लिये॥ जब [illegible]ह जांमें जो छोड़ो ना तुम अपना धरम, क्यों न कोई है खड़ा खंजर चलानेके लिये॥ ओम्‌का हो नाम लबपर और गरदनमें खम, चाह हो मानिन्द हक़ीक़त सर कटानेके लिये॥ देर होगी फिर न कुछ मेरी तरफसे याद रहे, बस चला आऊंगा मैं वादा निभानेके लिये॥

विधवा व्याह खण्डन।

१४—मृतेभर्तरि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्ये व्यवस्थिता-स्वर्गंगच्छत्यपुत्रापि यथा ते ब्रह्मचारिणः॥१॥ न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति–हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥२॥

सवैया।

१५—विधवाको नियोग सुझावैं सबै नहिं धर्म अधर्म

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

विचारत हैं। बिटिया औ बधू घरमें विधवा तिनको नहिं कष्ट निवारत हैं॥ मगदूर ते औरहि देत बताय पै आप नहीं पग धारत हैं। लखि धूरता ऐसे पखण्ड समाजकी भारत है रह्यो आरत है॥

गज़ल।

१६—कराना व्याह विधवोंका महज़ बेज़ा हिमाक़त है। पतिव्रत नाश करनेको यही सीखी लियाक़त है॥ लिखा जो वेद स्मृतियोंमें उसे सीधा ही समझाओ। न उलटे अर्थ करनेमें तुम्हें आती नदामत है॥ जो करना व्याह विधवोंका ज़बांसे आप फरमाते। समाजी भाइयो देखो नहीं आला शराफ़त है॥ न फैलाओ न फैलाओ अजी व्यभिचार दुनियांमें। बचावो धर्म विधवोंका जो दम बाक़ी ग़नीमत है॥ न बहकाओ न बहकाओ ये निर्मल चित्त वि[illegible]॥ ४॥ सभी छोटे बड़े जाने पतिव्रतधर्म भारत है॥ ?॥

थियेटर।

१७—कोई विधवा ले लो कैसी बनी है सुकुमारसी॥अं०॥ चटकीले नैना मतवारे कारे गुंफित केश संवारे, तनमें साबुन मुखमें पाउडर मलमल देह सुधारसी॥ कोई०॥ सोडा पी बिसकुट गटकावे 'चुरट स्वदेशी मुखमें दाबे' कुरसी टेबिल दरपन धरके सुंदर मांग निकारसी॥ कोई०॥ लेटिन जरमन अरमन जानें 'अङ्गरेजीमें गावे गाने' इस्लामीसे बहस करनको जानै अरबी फारसी॥ कोई०॥ मोजे बूंट रेसमी धोती 'कुरती औ कमीज़ तन सोती' बूंटीदार दुपट्टा ओढ़े आंखन सुरमा-सारसी॥ कोई०॥ जब इतवार शुद्धदिन आवे 'फैशनसे समाजमें जावे, धर्म सनातनके खण्डनमें व्याख्यान दे

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

डारसी ॥कोई०॥ भेद सकल सत्यारथ जानैं 'चौका छूत तनिक नहिं मानैं' लोप करे तीरथ व्रत संयम नैनवान जिन मारसी ॥ कोई० ॥ स्वामी जो नियोग बतलाया सो इस भामिनके मन भाया, ग्यारह पतिहित ग्यारह बिरियां मुख देखत लै आरसी ॥ कोई० ॥ छोटे मुंह बड़ी बात बनावे ईश्वरको निज वसमें लावे, परमज्ञान विज्ञान बतावे निराकार साकारसी ॥ कोई० ॥ ऐसी विधवा ले सुख पाओ 'बनो समाजी मौज उड़ाओ' धर्म सनातनकी दृष्टिमें देखत है भू भारसी ॥कोई०॥ सब गुन भरी खरी है नारी वर्णसंकरी सृष्टि पसारी, मनमें भरे कपट छल भारी ऊपर शिष्टाचारसी ॥ कोई० ॥ मिश्र न ऐसी बाल मिलेगी सकल समाजो काम करेगी, धर्म सनातनके काटनको कठिन धार तरवारसी ॥

सनातनधर्म महिमा।

[illegible] जब अपने सरपै इल्मोंकी बंधी मंडील सीधी थी ॥ [illegible] शास्त्रकी उस दम यहां तामील सीधी थी ॥ हर इक् मज़हब औ फिरकोंने किये हमले सनातनपर। मगर तक़दीर सीधी थी वहस तकमील सीधी थी ॥ जलाये थे कुतुबखाने मिलाये धूलमें मंदिर। न कुछ भी कर सके अपना धरमकी कील सीधी थी ॥ पता कब था यतीमोंका करें दावा खुदाई जो। सनातनधर्मकी मंडी हज़ारों मील सीधी थी ॥ सभी छोटे बड़े जानें कि सतका बोलबाला है। हटैं कैसे हमारे वेदकी तफ़सील सीधी थी ॥

१९—पग धर्म कर्म पै तो जमाये चले चलो। मग है विकट शरीर बचाये चले चलो ॥ भूले हुए किधरको हो जाइये होशियार। सोया हुआ है शेर जगाये चले चलो ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

गज़ल।

२०—कहा क़ातिलने खंजरको दिया आहिस्ता आहिस्ता॥ किया जब कमरसे अपने जुदा आहिस्ता आहिस्ता॥ अरे ओ मरने वाले याद करले अपने मालिकको। अभी काटेंगे तेरा हम गला आहिस्ता आहिस्ता॥ अगर तुम मुसल्मां हो जाओ तो मरना नहीं होगा। अगर वा जान ले खुदको मिटा आहिस्ता आहिस्ता॥ मिलेंगी हूरों गिलमा दौलतों दुनियां औ इज्जत भी। नहीं तो आना चाहती है कजा आहिस्ता आहिस्ता॥ चमकती तलवारके सामने हकीकतने क्या कहा था। जवाब हकीकत–नहीं मरनेसे डरता हूं कहा तब यूं हकीकतने। खुशीसे अपने खंजरको चला आहिस्ता आहिस्ता॥ मुकाबिल धर्मके दौलत औ दुनियां हूरों गिलमा क्या। धर्मपर मरनेसे होगा भला आहिस्ता आहिस्ता॥ मु[illegible]यांने लिखवाया यहां है जिन्दगीमें क्या। जो आया दुनि[illegible]॥ ४॥ गया आहिस्ता आहिस्ता॥ मैं हिन्दू हूँ और हिन्दूह[illegible] बुल- मेरी इज़्ज़त। अरे ओ दिलजलोंसे क्या कहा आहिस्ता आहिस्ता॥

२१—त्याग दिया निज धर्म्म सनातन॥ काला अक्षर भैंस बराबर, पढ़त वेद शठ आवत लाजन। देवोंकी निन्दा करि जहं तहं, उपजे जग निज वंश नशावन। पूरे बने फिरैं ईसाई, लगे कर्मसे जाति बनावन॥ ऋषि–पुस्तक क्षेपक बतलाके, गीत अशुद्ध लगे जड़ गावन॥ फंसे भ्रमजालमें भूतेशका पूजन कैसा। फूल अक्षतको हैं जाने नहीं चन्दन कैसा॥ १॥ देवतोंका जहां देखैं वहां करते खण्डन। है कमाले सदा वे पापका मण्डन कैसा॥ २॥ एकही रांड़को बतलाते हैं ग्यारह पति कर। है नहीं नाशका तो फिर कहो लच्छन कैसा॥ ३॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

धोखा ईसाईका होता है देखकर सूरत। ढंग नये चाल निराली है यह फैशन कैसा ॥ ४ ॥ चन्द्र वे शठ रचैं गुणकर्मसे मनमानी जाति। रखते बदनामोसे हैं लोकमें जीवन कैसा ॥ ५ ॥

स्वदेश प्रेम।

२२—सेवामें तेरी भारत तन मन लगायेंगे हम, अब स्वर्गका सहोदर तुझको बनायेंगे हम ॥ १ ॥ तुझसे जने तुझी-ने पालन किया हमारा। उपकार जितने करता क्या क्या गिनायेंगे हम ॥ २ ॥ तेरे ऋणोंका बोझा सरपर धरा हमारे, करके प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम ॥ ३ ॥ तेरे लिये जियेंगे तेरे लिये मरेंगे, सेवामें तेरी अपना जीवन बितायेंगे हम ॥ ४ ॥ घनघोर दुःख घटा भी हमपर घिरी खड़ी हो ॥ [illegible] भी न तुझको जीसे भुलायेंगेहम ॥ ५ ॥ तु स्वर्ग है [illegible]तु सौख्यगृह हमारा। तुझसे ही नेह नाता अब तो [illegible]ायेंगे हम ॥ ६ ॥ जब जब मरें तुम्हीं पै तब तब सदा जन्म लें। मरनेके वक्त ईश्वरसे ये मनायेंगे हम ॥ ७ ॥ गौरव गिरा है तेरा दुखने है तुझको घेरा। दुखमें तेरे दुखी हो आंसू बहायेंगे हम ॥ ८ ॥ प्यारे सुवन तिहारे फूट और मदके मारे। बेहोश जो पड़े हैं उनको जगायेंगे हम ॥ ९ ॥

भारतकी हालत पै दो आंसू।

२३—बतला दे बूढ़े भारत अब क्या है हाल तेरा ॥ किस कारण हुआ है भाई चेहरा निढ़ाल तेरा ॥ सूरत पे तेरी ऐसी छाई है क्यों उदासी। बिगड़ा हुआ है ऐसा सब खीलो खाल तेरा ॥ मुद्दतसे हो रहा तू महबूब रुए आलम। है दिल करीब बेढब हुसनो जमाल तेरा ॥ शैदा थी तुझ पै

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दिलसे यूरपकी जुमला कौमें। बेचैन कर रहा था सबको जलाल तेरा॥ सदियों तलाश करके सदहा गवांके जानें। हासिल हुआ था उनको जामें विसाल तेरा॥ लेनेको तुझसे भाई धन माल और शिक्षा। तालिब हर येक दिल था और खुश मिसाल तेरा॥ जिसकी वजहसे था तू मशहूर कुल जहांमें। किसने मिटा दिया वह कस्बो कमाल तेरा॥ मुशफिक तेरे बने हैं जहलो नफाक जबसे। जाता रहा है सारा जाहो जलाल तेरा॥ सन्तांको देख तेरी छाती फटै है मेरी। दिलको दुखा रहा है रंजो मलाल तेरा॥ सन्तान तेरी कब-तक होगी न तेरी रक्षक। तलिब न होगा हरगिज रफे ज़वाल तेरा॥

२४—खाहिश मेरी है यारब अर्जुन मुझे बनाना। शहजोर भीम करना मोहन मुझे बनाना॥ सानी भरतोंने भाई मुझको श्रवण बनाना। बलरामजीका देना लछ... बनाना॥ बजरङ्ग बनके गमकी लंकाको फूंक डालूं... रावांको फांदूं कोहे गिरां उठा लूं॥ यह आस मेरी पूरी या रःबे दो जहां हो। हो जोशे द्रोण दिलमें तनमें करणसी जां हो॥

चरखे की आरती॥ ९२॥

२५—जय चरखे बाबा! ॐ जय चरखे बाबा! वस्त्र विदेशी चक्र सुदर्शन, मैञ्चैष्टर ढावा जय चरखे बाबा०॥ भारत माता, भाग्य विधाता हूं स्वराज्य दाता। पराधीनता नाश हुई जब तुमको है काता। जयचरखे। दीनन पालन दुःख मिटावन, भारत भयहारी। सप्त शुद्धिके करने हारे, सेवउ नर नारी। जयचरखे बा०॥ भारतकी है गन मशीन तूं ठण्डा गोला। पुनियोंकी करतूत चली जब दुःशासन डोला॥ जयचरखेबा०॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

त्रेतामें धनुबाण भये अये अरु सतयुगमें परुषा । द्वापर चक्र सुदर्शन कलियुगमें चरखा ॥ जयचरखे बा० ॥ श्रीचरखेकी आरतीप्रेमसे जो गावे, हरिप्रेमसे जो गावे कहें महात्मागान्धी सुख सम्पति पावे ॥ जय चरखे बाबा० ॥

गजल स्वदेशी ।

२६—तमन्ना है कि मरकर भी चलन अपना स्वदेशी हो । मजा मरनेमें आये गर कफ़न अपना स्वदेशी हो ॥ दिले सोजां मेरा यह होस तो वाला पतिंगा हो । फिदा हो गर चिरागे अंजुमन अपना स्वदेशी हो ॥ गिला कैसा कहांका रंज हम काले ही अच्छे हैं । बुरा क्यूं है जो यह रंगे बदन अपना स्वदेशी हो ॥ यही है आरजू या ! रब चलन अपना स्वदेशी हो । यह दिल [illegible]ा स्वदेशी हो बदन अपना स्वदेशी हो ॥ जहां जायें [illegible] करें चरचा स्वदेशीका । ज़बां अपनी स्वदेशी हो [illegible]ना स्वदेशी हो ॥ विदेशी लेम्पको तोड़ें यह अच्छी [illegible]ना छोड़ें । दुआ मांगे चिरागे, अंजुमन अपना स्वदेशी हो ॥ यह फैंकें कोट कालर निकटई और बूट डाशनके । लिवास अपना स्वदेशी हो रहन अपना स्वदेशी हो ॥ कहांकी है यह मोटरकार सोडा लेमनेड बिस्कुट । फिरनगर हो स्वदेशी हो कफन अपना स्वदेशी हो ॥ ज़मानेको दिखायेंगे वह पहली अजमहो शौकत । जो सर तापा हर इक पहले वतन अपना स्वदेशी हो ॥

गजल ।

२७—मादरे हिन्द तु अब ऐसे बशर पैदा कर । आबरू रख लें तेरी सच्चे पिसर पैदा कर ॥ जिनकी दस्तोंसे तुझे कह दें स्पुती माता । कृष्ण अर्जुनकी तरह लखते जिगर पैदा

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

कर ॥ जो कुछ हो तेरी सुफल नाम हो तेरा रोशन। दूधमें अपने तु अब ऐसा असर पैदा कर ॥ धर्मके वास्ते जो हड्डी तलक भी दे दें। दिल हक़ीक़तका दधीचीकी कमर पैदा कर ॥ सत्यके मार्गसे जो पीछे कदमको न रखें। तू हरिश्चन्द्रसे फिर नूरे नज़र पैदा कर ॥ तुझको आज़ाद बनानेमें जो तैयार हैं अब। गान्धी और तिलकसे तू और पिसर पैदाकर ॥ धर्मको जो न कभी हाथसे छोड़ें अपने। राणा प्रतापसे फिर शेरे बबर पैदाकर ॥ जो तेरी लाजका हरवक्त रखें दिलमें ध्यान। लाजपतरायसे तू लाखों बशर पैदाकर ॥ जो खजानेको तेरे मालसे भरना चाहें। मालवीजीसे तू आराम जिगर पैदा-कर ॥ जाके मैदानमें जो दुश्मनको नीचा दिखायें। सेवाजी जैसे तू अब वीर बशर पैदाकर ॥ तेरी उन्नतिमें जो जान अपनी निछावर कर दें। तू जल्दी नेहरूसे अब सं[illegible] पैदाकर ॥ शरक़से ग़र्वतक हर गोशामें सिक्का बैठे[illegible] भारतमें ऐसा इल्मो हुनर पैदाकर ॥ धर्मपर जा[illegible] दोंकी तरह जो दे दें। उनकी कुरबानीमें तु कुछ न कसर पैदाकर।

गज़ल।

२८—गो लाख होशयार हूं और ज़ीशऊर हूं। लेकिन धरमके कामसे रहता ही दूर हूँ ॥ मन्दिर सभा समाजमें जाता कभी नहीं। हुकामके सलामको जाता जरूर हूं ॥ पबलिक भी कुछ न कुछ है रोब मेरा मानती। म्यून्सपल कमैटीका मैं मैम्बर जरूर हूं ॥ और लोगोंकी हाकिमोंसे करता हूँ शिकायत। खुफिया पुलिसके दफ्तरोंका जी हजूर हूं ॥ खुश क़िसमतीसे रायबहादुर भी बन गया। लीडर नहीं तो लीडरोंकी दुम जरूर हूँ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

नारी-धर्म ।

गजल ।

१—जगदीशने जगतका कारण तुम्हें बनाया । छाया हो उस पुरुषकी स्वाधीन जिसके माया ॥धृ० ॥ करतारने जगतको अपनी ही कल्पनासे । जड़ चेतनादि दुविधा निर्मान कर दिखाया ॥ जगदीश० १ ॥ अब तुमको ये उचित है भारतकी बीर बहनों । विद्याके बलसे अपनी वेगी पलट दो काया ॥ जगदीश २ ॥ इस देशमें कभी थीं सुलभासि योग्य देवी । ज्ञानी जनकको जिसने था योगबल बताया ॥ जगदीश० ३ ॥ सुन लो तुम्हें सुनावें मंदालसाकी शक्ति । अपने सुतोंको उसने निर्वाण पद लखाया ॥ जगदीश० ४ ॥ तुम खूब ... सीता सतीकी महिमा । पतिको प्रत्यक्ष प्रतिमा ... पुजाया ॥ जगदीश० ५ ॥ विद्यानुराग जब था ... अय प्यारी बहनों । प्रत्येक पदमें पतिसे पहले हि नाम पाया ॥ जगदीश० ६ ॥ तजकर अनारी पनको नारी स्वयं विचारो । पतिवर्त धर्म विद्या शंभु तुम्हें सुझाया जगदीश० ७ ॥

गजल ।

२—अरी बहिनों अविद्याका जो घूंघट डाल वैठी हो। इसीसे आज भारतमें दुखो कंगाल बैठी हो ॥ नहीं विद्या है कुछ तुममें तभीं तो यह निरादर है । है धिक जीवन तुमारा जो फुलाये गाल बैठी हो ॥ न कुछ सन्तानों तकको तुम सिखा सकती हो ऐ बहिनो । बिना सींगोंके तुम अपने बनाये लाल बैठी हो ॥ तुम्हारी कैसी इज्जत थी औ अब पैरोंकी जूती हो। शरम आती नहीं तुमको क्या खाये ग्याल बैठी हो ॥ सभी

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

छोटे बड़ोंमें अब है चर्चा जाहिलीपनकी। जो पढ़ने और पढ़ानेकी छुड़ाये चाल बैठी हो।

शेर—कुशलतासूचक कलायें मानती थीं जो कभी।
हैं कलहकुशला हमारी गृहणियां प्रायः सभी।

दादरा।

३—तनपर ओढ़ो लाज-चदरिया बहिना सकल काम बन जाय ॥ अं० ॥ किरपाकी चारो तरफ किनारी, सीमन शील करो जरतारी, शोभा सब अंग छाय ॥ तन० ॥ धरम करमकी कस लो चोली, दुराचारको मारो गोली। जगमें कीर्ति दिखाय ॥ तन० ॥ लाज शरमकी पहिरो सारी, थी जैसे दमयन्ती नारी। दीन्हों तुम्हें बताय ॥ तन० ॥ निगम अगम निरखो घूंघटमें, दया धर्म राखो निज घटमें। क[illegible] दरिद्र विसराय ॥ तनपर ओढ़ो० ॥

भजन।

४—बहनों पहनो री सुहागन ज्ञान गजरा ॥ टेक ॥ दया धर्मकी ओढ़ो चुनरिया। शीलका नेत्रोंमें डारो कजरा ॥ लाज करो तुम परपुरुषोंसे। अपने पतिका देखो मुखरा ॥ सास ससुरकी सेवा कीजो। अपने पतिसे न कीजो झगड़ा ॥ कहे ऋनाथ बिन विद्या बहनो। सहती हो तुम बहनों अति दुखड़ा ॥ पहनो० ॥

५—पति अपनेमें राखो ध्यान, इससे बढ़कर धर्म नहीं ॥
तन भी दीजिये मन भी दीजे, अर्पण कीजे प्राण ॥ बढ़कर ॥
जो पति अपनेकी आज्ञा धारो, सुन्दर हो सन्तान ॥ बढ़कर ॥
ऋषि मुनि गावें वेद भी गावें, सुख होवे प्रमाण ॥ बढ़कर० ॥
सम्पत पावो दुःख विसराओ, पावो पद निर्माण ॥ बढ़कर० ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सन्ध्यावर लो राम सिमर लो, धर्म करो नित दान ॥बढ़कर०॥
जो पतिकी आज्ञा नहिं माने, मिले नरक सामान ॥बढ़क'०॥
सुख सम्पत जो चाहो बहना, मेरा कहना लो मान ॥बढ़कर०॥

६—सिया प्यारीकी शोभा फुलवारी बनी, हमारी बनी, आज न्यारी बनी। कथा दुलारी बनी, जायें सारी सखी, तोपे वारीबनी, सिया ॥ध्रु०॥ दो०-चार चतुष्पद चार खग, चार फूल फल चार। श्रीसीताके अंग खिले, शुभ सोला शृङ्गार॥ हमारी बनी० ॥ १ ॥ अश्वग्रीव गजगामिनी, कटिकं हरि मृग-नैन। हंसबदनि वेणी मयूर, शुक नाशा पिक वैन ॥ हमारी० ॥ ॥ २ ॥ सूर्यमुखी कर कुमुद पद. पद्म गुलाब कपोल, अधर-बिंब दाड़िम दशन, कुच कपित्थ श्रीमौल ॥ हमारी बनी ॥ ३ ॥ वेदविदित तव भेदगति, शम्भुजनित बुध कोइ। गिरिकन्या [illegible] प्रबधु, विष्णु पतिव्रत सोई ॥ हमारी बनी० ॥ ४ ॥

[illegible]या कर नहीं सक्ती भला यदि शिक्षिता हों नारियां० [illegible] राज्य सुधर्म रक्षा करचुकी सुकमारियां॥लक्ष्मी अहिल्या बाई जाबाई भवानी पद्मिनी ऐसी अनेकों देवियां हैं आज जासकतीं गिनी॥ निज नारियोंके साथ यदि कर्त्तव्य अपना पालते। अज्ञानके गरदे गढ़ेमें जो न उनको डालते॥ तो आज नर यों मूर्ख होकर पतित क्यों होते यहां। होतीं जहां जैसी स्त्रियां वैसे पुरुष होते वहां॥

गीत कन्या-शिक्षा थियेटरी तर्ज (१)

८—प्यारी २ ललनाओं शिक्षा सुनों! तनमन धनसे गुड़िया खेलो खेलखालकर शिक्षालेलो॥ उनकी शादी रचाओ पति धर्म्म सिखाओ आज प्यारी २ ललनाओ! भोली २ ललनाओ० माता पिताकी आज्ञा मानो बहिन भ्राता भावज सन्मानो, प्रति उत्तर न देना कटु बचन हूं न कहिना आज प्यारी २ ललना

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

जो भोली २ ललना गो शिक्षा० संग सखिनमें मिलके चलना, कभी न केहुसे लड़ना भिड़ना। झूठ बोलो न भूल सत्य सबका है मूल॥ आजा प्यारी २ ललना ओ भोली २ ललनाओ! शिक्षा०! गजानंदकी विनय सुनो सब सुन २ के फिर हृदय गुनो सब। आजा प्यारी २ प्यारी बहिनो, हमार सुख पैहो अपार।

खमसा।

९—पति प्यारेसे बहिनो प्रेम करो। पति की भक्ति और सेवा है केवल धर्म नारीका। सती सर्वस्व प्रियतम है बचन है वेदचारीका॥ पढ़ो इतिहासमें वर्णन सती और वीरनारीका। तथा लीलावती इत्यादि लोपा गान्धारीका॥ (टेक) अमृत ज्ञानको पान करो सखी कुमति अविद्याको वेग हरो, पति प्यारेसे बहिनो प्रेम करो०। (शैर) करो अभ्यास विद्याका परिश्रम रात दिन करके। तुम्हारे दूर हों अज्ञान त[illegible] और बाहरके॥ सुनो पति भक्तिकी महिमा जरा तुम ध्य[illegible] धरके सतीके सतसे आसन डोलते हैं विष्णु शंकरके॥ (टेक) तनमन धन तर्पण सबकी जो पतिचरणनमें शीश-धरो। पतिप्यारेसे बहिनो प्रेम करो॥ (शैर) सती सीताने जो पतिप्रेमका आदर्श दिखलाया, तथा तन त्यागके दुर्गाने पावन धर्म दर्शाया। जिकर इतिहासमें है अन्यतर सतियोंका भी आया। जिन्होंने देश भारतवर्षमें सुयशको खूब फैलाया॥ (टेक) अब अनुकरण सतिनको कीजै जरासा सुख पाओ गहिरो। पति प्यारेसे बहिनो प्रेम करो०॥ (शैर) सदा निष्काम होकरके बड़ोंका कीजिये आदर। न भूलो तुम कभी उपदेशका उनके कोई अक्षर॥ न आने दो कभी अभिमानकी छाया जरा दिलपर। कहे कृष्ण सुनो बहिनों करे कल्याण जगदीश्वर॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दादरा।

१०—पतिसेवामें ध्यान लगाया करो। नित उठि अंग श्रृंगार सहेली पति चरणों सर नाया करो। पति०॥ यदि प्रियतम परदेश गये हों मत श्रृंगार बनाया करो। पति०॥ जो आज्ञा देवें पति प्यारे वाही समय कर लाया करो। पति०॥ खान पान निज पीछे कीजै पहिले पतिको जिमाया करो०॥ कृष्णकला समुझाय कहत है पतिव्रत धर्म निभाया करो। पति०॥

दादरा।

११—पतिसेवाको तनमनसे करती रहो। हाँ कैसे अंधे क्रोधी जड़ तुम चरणन सर धरती रहो। पति०॥ धर्म एक व्रत नेम एक यह काय वचन मन करती रहो। पति०॥ मित सुख त[illegible] पितु भ्राता छोड़ अमित सुख भरती रहो। पति०॥ [illegible] कहाय पतिकी करि सेवा दुख हरती रहो। [illegible]॥ श्रीयमुने पतिसंग सिधरिहो निज पतिव्रत अनुसरती रहो। पति०॥

गीत।

१२—विनापति सूनो सब संसार। पतिही प्राण पति ही जगजीवन पति ही है करतार। पतिहीसे पति है या तनकी पति पत राखनहार॥ बिना०॥ जब लों पति तब ही लों पति है विन पति विपत हजार। जाकी पति पूरण है जगमें वही धन्य है नार॥ बिना०॥ पति राखे पत रहत जगतमें मुनि जन कहत पुकार। पति बिनु विपत सहैं सब निशदिन जामे कोटि विकार॥ बिना०॥ पतितहु नारि नाम निज पतिसे पावत है निस्तार। पति विन सुनो नारिको जीवन है जगमें धिक्कार॥ बिना०॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

एक बाल विधवाकी कहानी।

१३-एक बाल अवस्थाकी है विधवाकी कहानी। मां बापने जब उसके पुनर व्याहकी ठानी॥ मतिभर्मसे होने लगी जब धर्मकी हानी। कहने लगी मुंह तकके वो भोलीसी अयानी॥ मैं रांड हूँ और बापको उत्साह है कैसा। पति तो गया वैकुण्ठमें अब व्याह है कैसा॥ विधवाको कभी पुत्र तो जनते नहिं देखा। दुलहिन तो किसी रांडको बनते नहीं देखा॥ सर जायगा पतिधर्म पै तब भी न मुड़ूंगी। जो टूट चुकीं चूड़ियां वो फिर न जुड़ेंगी॥ जिस सरको कि पतिदेवके चरणोंमें था डाला। अब कौन है उस सीसका फिर गूंथने वाला॥ हैं कौन जिन्होंने ये नया वेद निकाला। जो धर्म पतिव्रतको कभी देखा न भाला॥ ए ज़ातके बुजुर्गों जरा तुम्हीं खबर लो। गर और कछु न [illegible] इतना ही कर लो॥ संसारका सब पाप कटे न[illegible] दो। इस व्याहसे तो भरके जहाजोंमें डुबो दो॥

दादरा।

१४—कलियुगके नये नये रस्ते चले। लोग उनमें सुनो सजनी फंसते चले। विधवन वेश्यानियम सिखाकर सौभागिन पर हंसते चले॥ कलि०॥ इस पुत्रनहित ग्यारह पतिन संग एक नारिको कस्ते चले। कलि०॥ ओयमुने जप जोग याग सब मेंट मेंट सब रस्ते चले॥ कलि०॥

गोसेवा।

लावनी। पदताल। धुमाली।

१-सुनो भारतवर ऋषिसन्तान, कहां गोरक्षा धर्म समान॥ ॥ धृ०॥ मनुष जब भये दुराचारी, पाप पृथ्वीपै हुआ

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

भारी। धरा तब धेनुरूप धारी, विधातासे कहे ललकारी॥ दोहा – क्यों उपजावत सृष्टिमें, जो प्रजा करत अन्याय। मानन वेदप्रमाण आपको, मूर्ख होत दुखदाय। विनय मेरी सुनिये कृपानिधान, कहां गौरक्षा० ॥ १ ॥ सदाशिव दीनन हितकारी, करत तुम प्रलय सृष्टि सारी। शीघ्र दुष्टनको संहारी, हरो त्रैताप हे त्रिपुरारी ॥ दोहा—भांग धतूरा खायके क्या रहे समाधि लगाय। खोल त्रिनयन मैनमदगंजन, किजे वेग सहाय। तुम्हें क्यों नहीं हमारो ध्यान। कहां गौर०॥ ॥ २ ॥ विष्णु तुम जग पालनहारे, हमारो कष्ट न क्यों टारे। कहो अब कैसे मौन धारे, दुष्ट नर लाखन गौ मारे। दोहा—करत आप वैकुण्ठमें लक्ष्मीसहित विलास। हम दुखिया निशिवासर टेरत, होत हमारो नाश॥ दयानिधि [illegible]वान॥ कहां गौरक्षा० ॥ ३ ॥ गगन भई ब्रह्म-[illegible], बसो गोलोक धेनु धर धीर। खायें जो पुरुष [illegible]त क्षीर, उचित है हरें तुम्हारी पीर॥ दोहा—धर्म सनातन है यही सुनो आर्य्य मन लाय। सतगुरु वेद विदित शम्भुगति, गोविन्दके गुण गाय॥ अहिंसा परमधर्म लो मान॥ कहां गौरक्षा० ॥ ४ ॥

२—दुःख पाती गौ बिचारी, मूक अति गम्भीर है॥ टेक॥ घास पत्ते सूख खाती, जल पिये गन्दा सदा। तौ भी नहीं भर पेट पाती, क्या पड़ी तकसीर है॥ १ ॥ गाय बंधती है जहां पै, जाय नहिं सूरज हवा। सड़ रहा गोमूत्र गोबर, मच्छरोंकी भीर है॥ २ ॥ रह गया है तनमें उनके, चर्म पंजर अस्थियां। मक्खियां नहीं चैन देता, कुछ नहीं तदबीर है॥ ३ ॥ कष्ट इतना सहन कर, दूध बछड़े देय वे। कौन उपकारी गउ सम, हृदय राखत धीर है॥ ४ ॥ भक्त गौके सत्य तब ही,

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

युक्तिसे पालन करें। गऊ चरणसे मुक्त समझो, खुल गई तक-दीर है ॥ ५ ॥ शरण तेरी आपड़ा है, आस पूरन कीजिये वाजपेयी तुही भगवान हरन हारयो पीर है ॥ ६ ॥

३—गोपालन है सुखदाई, जब करै जतन मन लाई ॥ टेक॥ ऐसी गोसार बनावे जहं, धूप हवा नित जावे। मलमूत्र ससक नहीं पावे, अस देहु सुढार बनाई ॥ वह जगह साफ करवा दवे, कूड़ा सब झारि फिकावे। अस गौअनको नहलावे, पिस्सू किल्ली धुइ जाई ॥ २ ॥ नहिं सड़ा गला हो चारा, दीन्हेंसे होइ विकारा। दिन माहिं चारही बारा, ताजा जल स्वच्छ पियाई ॥ ३ ॥ जो होय दुधारू गाई, तेहि बछड़ा सांड़ बनाई। बछुरा बलिष्ट हुई जाई, तन मन धन देहु लगाई ॥ ४ ॥ पितु मातु बहिन कहलाते, संयुक्त होन नहिं पावें। अस किये दूध घट जावे, कहैं वाजपेइ समझाई [illegible]

४—है सरल-स्वभाव विचारी, यह गाय [illegible] प्यारी ॥ टेक ॥ वनमें दिन बीते सारा, मिल जाय [illegible] चारा। उसहीसे करै गुजारा, पर देत दूध गुणकारी ॥ १ ॥ अमृत-सम दूध कहावे, औषधियां कई बनावे। जो पियै पुष्ट हो जावे, स्वादिष्ट बहुत हितकारी ॥ २ ॥ उससे दधि मही मलाई, खोवा रबड़ी मन भाई। मक्खन घी आदि बनाई, पकवान मिठाई सारी ॥ ३ ॥ गोबरसे घर लिपवाते, कण्डा फिर खाद बनाते। गो-मूत्र काममें लाते, है शुद्ध और कफ-हारी ॥ ४ ॥ बछड़े हम उससे पावें, खेतीका काम चलावें। गाड़ीमें जोते जावें, वे करें परिश्रम भारी ॥ ५ ॥ मरनेपर भी न भुलावें, हड्डी चमड़ा दे जावें। सब भांति काममें आवें, है गाय बड़ी उपकारी ॥ ६ ॥ कहैं वाजपेइ समझाई, है गाय हमारी माई, है ऋण उसका अति भारी ॥ ७ ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

५—दयानिधि ! संकट यह निरवार ॥ टेक ॥ भूखी प्यासी गौएं फिरतीं, सहती दंड प्रहार । मनमलीन तनछीण दुखारी, रोवत अंसुआ ढार ॥ १ ॥ केहू विधि कछु खाय भागहीं, तुमहिं दूध तैयार । बछरा बैल खेत कहँ जोतहिं, खैंचहिं सकटह भार ॥ २ ॥ उद्यम इक खेतीको भारी, भारत देश मझार । खावहु पहिरौ चैन उड़ावहु, यह व्यापार अधार ॥३॥ संख्या घटत धेनुका दिन दिन, उनपर अत्याचार । अन्त समय गति कौन होइगी, कीन्हों कवहुं विचार ॥ ४ ॥ वाज-पेइ सुख पैहौ तबहीं, गोरक्षा चितधार । हे जगदीश ! आस यह पुजवौ विनती वारम्वार ॥ ५ ॥

६—देश अपनो हैं नहीं जब धनकी केतिक बात । विपतमें सब धर्म्म छूटे होत गऊअनघात ॥ श्रीयमुन अब कौनसे हम कहें [illegible] बात। उठो गऊएं पालो घर २ यही यत्न दिखात ॥

गज़ल ।

[illegible]—तुम्हारी उल्फ़तने पुत्र हमको वो दिन दिखाये। ये दिन दिखाये। अजब है दुनियांका कारखाना कभी हंसाये कभी रुलाये ॥ हुई जो भक्ती तुम्हारे दिलमें तो आप जाकरके मुझको लाये। उसीके बदलेमें तुमको मैंने हैं दूध प्याये औ घी खिलाये तुम्हारी बातें जो अब मैं खोलूं कहा कि बछड़ोंसे ईख बो लुं बना मुकद्दम चलाया कोल्ह छुड़ाके हमसे हमारे जाये। हमारे पुत्रोंसे अन्न वोकर तभी तो बैठे हो सेठ होकर ॥ कभी भी तुमने खुशीमें जाकर न भुस खिलाये न रस पिलाये। न करते गर वो कपास पैदा कहां थे कपड़े कहां थी मैदा ॥ किया है इसपर भी सब्र मैंने न सारे जाड़ोंमें वस्त्र पाये। समझके बेटोंने तुमको गंदे कराये तीरथ चढ़ाके कंधे। बस अब तो, दो खोल आंख अंधे कि रावजीने भजन सुनाये।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दादरा ।

८—हाय दुश्मन मेरा कुल जमाना हुआ । शैर—जननीसे अधिक सबसे मैंने प्रेम निभाया। ताजिन्दगी अमृत समान दूध पिलाया। उस नेकीका बदला उठाना हुआ ।हाय०॥ ऋषियोंको हमेंशा रही मैं प्राणसे प्यारी। राजा दिलीपने मेरी सेवा करी भारी। हाय अबतो सब अपना बेगाना हुआ। हाय० ॥ शैर—पलती थी नस्ल मेरी कभी कृष्णके हाथों। अफसोस आज उनकीही औलादके हाथो। मुझे बूचड़के हाथोंमें जाना हुआ। हा०॥ शैर-भक्तहितैषी हूं मगर लगती बुरी हूं। उफ् वे जुबां न बेकसूर खानी छूरी हूं।हाय दुशमन मेरा कुल जमाना हुआ॥ शैर—क्याही अजीब आज जमानेका हाल है। हैरान देख २ कं ये छेदालाल है। अजी अब तो धरम एक बहाना हुआ।

नोन

९-मुंह मोड़के बैठे हैं अब हम धर्म दयासे। मर[illegible] गांयें तो मर जांये बलासे।कुछ कर्मसे मतलब है न[illegible] ताल्लुक, दिलनअ फिदा जान है होटलकी गिरजासे । हर वक्त चुगलखोरी जुआ छलके दास हैं, रात दिन ये देख वे लड़ते हैं हवासे। कुत्तोंसे प्यार होगा मगर गायसे नफरत, बीमार गर पड़ें तो जिये गोदुग्ध दवासे है। लाख बार ऐसोंपर धिक्कार गजानंद, डरते नहीं गुनाहसे और उसकी सजासे ॥

१०—अच्छी उपज होती नहीं है भूमि बहु परती पड़ी। गोवंशका बध ही यहां है याद आता हर घड़ी॥ है भूमि बन्ध्या हो रही वृष जाति दिन दिन घट रही। घी दूध दुर्लभ हो रहा बल वीर्य्यकी जड़ कट रही॥ था समय वो भी एक जो अब स्वप्न जा सकता कहा। घी तोल सेर विशुद्ध रुपयेमें हमें मिलता रहा ॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

दादरा।

११—ये गऊयें रोती हैं कोई इनसे खफा क्यों हुए। सहि दुःख तृण चरि दूध पियावहिं ताहूपर दुःख ढोती है॥ कोई०॥ तुमरे हो नित शरणमें रहकर तुमरे ही मुख जोहती हैं॥ कोई०॥ नित्य कसाइन हाथ आपने प्राण तुमरि आगे खोती हैं॥ कोई०॥ गजानन्द मातहिं तनि हेरो दीन बहुत अब होती हैं॥ कोई०॥

१२—दांतों तले तृण दाब करि हैं दीन गांयें कह रहीं। हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही॥ हमने तुम्हें मांकी तरह है दूध पीनेको दिया। देकर कसाईको हमें तुमने हमारा बध किया॥ जो जन हमारे मांससे निज देह पुष्टि विचारके। हैं कह रहे उदरस्थ हमको क्रूरतासे मा[illegible] मालूम होता है सदा धारें रहेंगे देह वे। या [illegible] जायंगे उसको विना संदेह वे॥ हा दूध पीकर [illegible] पुष्ट होते हो नहीं। दधि घृत तथा तक्रादिसे भी तुष्ट होते हो नहीं॥ तुम खून पीना चाहते हो तो यथेष्ट वही सही। नर योनि हो तुम धन्य हो तुम जो करो थोड़ा वही॥

होली काफी।

१३—गउअनके दुःख टारो कि जो है धर्म्म तुम्हारो। दुःखित होय गऊएं विलखातीं कोई न देत सहारो॥ दूध दही देवें नित तृण चरि आप सहैं दुःख भारो। तनिक मन मांहि विचारो॥ गउ०॥ देवी देव बसत जेहि तनमों मात कहे जग सारो। मात कहेकी लाज राखिये जग यश होय तिहारो॥ मातको कष्ट निवारो॥ गउ०॥ उठहु सखा सब मिल जुलि धावहु गौरक्षादि परचारो। गावहु गीत नित्य गउअनके जीवन जन्म सुधारो॥ अंत पै स्वर्ग सिधारो॥गउ०॥

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

गजानन्द राधापति उरधरि कीजै यत्न सवारो। जासे सब बाधा हटि जावे भारत पूर्ण हमारो॥ बढ़े नित सुख भण्डारो। ग३०॥

सोरठा—कृष्णचन्द्र गोपाल गऊरक्षा अब कीजिये।
भरे नदी औ ताल भारतमें गौरक्षसे॥

देश ताल रूपक।

१४—जागियो बलिजात वीरो जागियो बलि जात। छांड़ि आलस लखो प्यारे दिवस है कि रात॥ तुमीं मेरे प्राण-रक्षक तुमी पितु और मात। आश तुमरी करके गई शरण दीजो तात॥ वीरो०॥ देशवासी दुखित तुमरे अब कहां कुशलात। सुत पितामें प्रेम नाहीं कौन काको भ्रात॥ वीरो०॥ देवता है गऊ तुमारी कहो मुखसे बात। पुत्र जीवित शीश कटते धर्मकी गति जात॥ वीरो०॥

१५—तुम सुन चुके हजारों गमसे भरे हराने। के भी सुन लीजिये फसाने॥ उम्मेद जांवरीको तु मुझे थी। लेकिन लगे हो तुम भी तेगे सितम चलाने॥ सूदपर जो कातिलको मेरे दौलत। क्या इसलिये तवंगर तुमको किया खुदाने॥ गर पास मालोजर है कीजे सवाब हासिल। तुम मुझ गरीबको क्यों नाहक लगे सताने॥ था फर्ज यह तुम्हारा करते हमारी रक्षा। अमृतके वृक्षको क्यों उलटा लगे गिराने॥ ख्वाब गरांमें कबतक बेखुद पड़े रहोगे। लो काम अकलसे तुमें दो अक़्ल है खुदाने। पुर-साने हाल अपना कोई नहीं जहांमें। हम किसके पास जायें तक़दीर आज़माने॥ आजाओ होशमें तुम मेरी फरयाद सुनकर। आयेंगे काम हरगिज नहि यह उजर बहाने॥

(समाप्त)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

सनातन धर्मकी पुस्तकें।

धर्मकल्पद्रुम प्रथम भाग २)
" द्वितीय भाग १॥)
" तृतीय भाग २)
" चतुर्थ " २)
" पंचम " २)
" षष्ठ " २॥)
" सप्तम " २)
प्रवीण दृष्टिमें नवीन भारत
प्रथम भाग २)
द्वितीय भाग २)
साधनचन्द्रिका १॥।)
शास्त्रचन्द्रिका १॥)
धर्मचन्द्रिका १)
नवीन दृष्टिमें प्रवीण भारत १)
आचारचन्द्रिका ॥)
नीतिचन्द्रिका ॥)
चरित्रचन्द्रिका प्रथम भाग १)
" द्वितीय भाग १)
धर्मप्रश्नोत्तरी ।)
सती-चरित्र-चन्द्रिका २)
नित्यकर्म चन्द्रिका ।)
धर्मसोपान ।)
सदाचारसोपान −)

कन्याशिक्षासोपान −)
ब्रह्मचर्यसोपान ।)
राजशिक्षासोपान ≡)
साधनसोपान ।)
शास्त्रसोपान ।)
धर्मप्रचारसोपान ≡)
उपदेशपारिजात ॥)
कल्किपुराण १॥)
योगदर्शन २)
श्रीभारतधर्ममहामण्डलरहस्य १।)
निगमागमचन्द्रिका १ म भाग १)
" २ य भाग १)
मन्त्रयोगसंहिता १)
हठयोगसंहिता ॥।)
तत्त्वबोध =)
स्तोत्र कुसुमाञ्जलि ।)
दैवीमीमांसादर्शन १ भाग १॥)
श्रीमद्भगवद्गीता १ खण्ड १)
विष्णुगीता १)
सूर्य्यगीता ॥)
शक्तिगीता १)
धीशगीता ॥।)
शम्भुगीता १)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

संन्यासगीता	१)
गुरुगीता	।)
चतुर्दशलोकरहस्य	।)
परलोकरहस्य	।)
आर्य्यगौरव	॥)
सनातनधर्म दीपिका	।॥)
धर्मकर्मदीपिका	॥)
वर्णाश्रमसंघ और स्वराज्य	=)
स्त्रीशिक्षा भजनावली	-)॥
स्त्रीधर्म चेतावनी	-)
व्रतोत्सव-चन्द्रिका	२)
आचार-प्रबन्ध	१)
पारिवारिक प्रबन्ध	१)
भूदेव चरितम्	१॥)
गो-रक्षा	।=)
श्रीगोमाताकी जय	-)
प्रयागमाहात्म्य	॥=)
श्रीरामगीता	२॥)
वैष्णवरहस्य	)॥
श्रीशास्त्रीजीके दो व्याख्यान	॥=)
धनुर्वेदसंहिता	।)
कल्पलतिका बालचिकित्सा	।)
मानसमञ्जरी	।)
इङ्गलिशग्रामर	।)
बारहमासी	-)
वसन्त श्रृङ्गार	≡)
कन्याविनयचन्द्रिका	-)

इश्क दोहावली	)।
मेगास्थनीजका भारतवर्षीय वर्णन	॥=)
वारिनहेस्टिङ्गज	१)
आदर्श-जीवन-संग्रह	१॥)
कार्तिकप्रसाद खत्रीका जीवन चरित्र	=)
सूर्यपुराण आदि २८६ रत्न	॥≡)
कर्मविपाकसंहिता (भाषा टीका सहित)	१॥)
भर्तृहरिशतक त्रयम्	॥।)
रामयशशिरोमणिनाटक	१॥।=)
सुन्दरविलास	
बूटीप्रचार	
आल्हारामायण आठोकाण्ड	
विश्रामसागर	३।=)
गीता पंचरत्न बड़ा	१॥।=)
महाभारत दोहा चौपाईमें	२॥)
गृहभूषण (भाषाटीका सहित)	॥-)
महाभारत हिन्दीमें	७॥)
रसराजमहोदधि	४)
सुखसागर	२॥)
आल्हाखण्ड बड़ा	३)
प्रेमसागर	१॥।)
बृजविलास	२॥)
योगवासिष्ठ बड़ा	८)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

शिवपुराण भाषा	३-)
माघवनिदान भाषा टीका	२॥)
रामायण मूल बड़े अक्षरोंमें	६)
रामायण सूर्यदीनकृत भाषा टीका सहित	८)
बड़ा अश्वत्थीचरित्र	।=)
आनन्दसागर	।-)
ज्योतिषसार भा० टी० सहित	१॥=)
कौतुकरत्नभण्डार	१=)
विवेक चूड़ामणि संस्कृत टीकासहित	१।)
श[illegible]	॥)
[illegible]ति	≡)
[illegible]ह संस्कृत टीका सहित	॥)
शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्याई	।-)
फलित संग्रह	॥।)
प्रेत मजरी मूल	।=)
लघु संग्रह	≡)
वारुणी हवन पद्धति	।)
साम्वत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग	=)॥
पञ्चांग पद्धति	।-)
गोपाल सहस्रनाम	=)॥
दुर्गासप्तशती खुला पत्रा	।=)
अनन्तव्रत कथा मूल	-)
अनन्तव्रत कथा भा० टी० सहित	=)
सत्यनारायण व्रत कथा मूल	=)॥
सत्यनारायण व्रत कथा भा० टीका सहित	≡)॥
गरुड़ पुराण भा० टी० सहित	॥)
सत्यहरिश्चन्द्र नाटक	≡)
गायत्री पुरश्चरण	=)॥
दशकर्म पद्धति	।≡)
दत्तात्रेयतन्त्रम् भा० टी० सहित	॥=)
मेघदूत भा० टी० सहित	॥-)
उड्डीशतंत्र भा० टी० सहित	॥)
नारायण बलि भा० टी०	॥=)
गणेशचतुर्थी कथा भाषा टीका सहित	।-)
गीतगोविन्द भा० टी० सहित	॥)
जातकालंकार भा० टी० सहित	।≡)
हितोपदेश	॥≡)
शीघ्रबोध भा० टी० सहित	।≡)
शकुन्तला नाटक (राजालक्ष्मणसिंहकृत टीका)	॥।)
शैवमनोरंजनी चारो भाग	१=)।॥
दुर्गासप्तशती खुलापत्रा ग्लेज	१॥)
पार्वण श्राद्धप्रयोग	=)
वैद्यजीवन संस्कृत टीका सहित	॥।)

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा चक्रवर्ती	॥।)
कार्तिकमाहात्म्य भा० टी० सहित	१)
एकादशी माहात्म्य भा० टी० सहित	१)
ताजिक नीलकंठी भा० टी० सहित	१॥।)
लघुदर्पण	२॥)
मुहूर्तचिन्तामणि भा० टी० सहित	१॥)
रामाश्वमेध	१॥)
भारत सार	१॥)
चौबीस गायत्री	≡)॥
प्रश्नोत्तरी भा० टी० सहित	)॥
शिवस्वरोदय भा० टी० सहित	॥=)
नित्यकर्मप्रयोगमाला	॥-)
भावकुतूहल भा० टी० सहित	॥।)
सिद्धान्त पटल	=)॥
अर्कप्रकाश भा० टी० स०	१)
गजल पचीसी	)॥
पहेली बुझौअल	)॥।
पहली पुस्तक	)॥
मशहूर गवैये प्रथम भाग	॥-)
गजल बहार	)॥।
लावनी पंचरत्न	-)
ज्ञानमाला	-)॥
भजनरामायण	-)।
गजलियात दिलबहलाव	-)
भजन प्रभाती	-)
भरतविलाप	-)
प्राणप्यारी	-)।
भजन रत्नाकर	)॥
बहार दर्वेश	॥≡)
इयशालहोत्र	।=)॥
दादरादर्पण	[illegible]
व्यंजन प्रकाश	[illegible]
रामपटल	)॥
मीराबाईके भजन	-)
दृष्टान्त प्रदीपिनी प्र० भा०	॥≡)
भजनमुक्तावली	=)
लघुपाराशरी भा० टी०	।-)
सन्तान गोपाल	-)
शब्दरूपावली	=)
वृहत् रामरहस्य लीला	=)
हिन्दी वर्णपरिचय	-)

पता—निगमागम बुकडिपो,
भारतधर्म सिण्डिकेट लिमिटेड,
स्टेशन रोड, बनारस सिटी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

धर्म, राजनीति, तत्त्वज्ञान आदि विषयोंका मनोरंजनके साथ ऊहापोह कर भारतीय जनताको सज्ञान, जाग्रत और आत्मनिर्भर बनानेवाला साप्ताहिक—

भारतधर्म

केवल ३) वार्षिक देनेसे अपने प्रेमीकी एक वर्ष पूरी सेवा करता है। आज ही एक कार्ड लिखकर नमूना मुफ्तमें मंगाइये।

इसी उद्देश्य और ढंगकी अंग्रेजी मासिक पत्रिका—

महाशक्ति

का वार्षिक मूल्य भी केवल ३) है। ग्राहक बनिये।

पता—

मैनेजर, संवादपत्र विभाग, सिण्डिकेट भवन,

बनारस सिटी।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri

श्रीस्वामी दयानन्द महाराज प्रणीत

धर्मकल्पद्रुम सात खण्डोंमें ।

(यह हिन्दुधर्मका विश्वकोष है)

श्रीगोविन्द शास्त्री दुगवेकर प्रणीत

चरित्र-चन्द्रिका दो भागोंमें और सती-चरित्र-चन्द्रिका एक भाग ।

(इसमें वैदिक कालसे वर्तमान कालतकके प्रधान २ स्त्री-पुरुषोंके मनोहर चरित्र हैं)

श्रीगोपालचन्द्र चक्रवर्ती वेदान्तशास्त्री प्रणीत

सरल बंगला शिक्षा ।

(हिन्दीके द्वारा बंगला सीखनेकी उत्तम पुस्तक है ।)

हमारे यहां मिलती है । और भी सब तरह की पुस्तकें विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं । बड़ा सूचीपत्र मंगाइये ।

मैनेजर—

निगमागम बुकडिपो, बनारस सिटी ।

CC-0. Bharat Dharma Mahamandal Collection. Digitized by eGangotri